Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

یُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ یُّطۡفِـُٔوۡا نُوۡرَ اللّٰہِ بِاَفۡوَاہِہِمۡ وَیَاۡبَی اللّٰہُ اِلَّاۤ اَنۡ یُّتِمَّ نُوۡرَہٗ وَلَوۡ کَرِہَ الۡکٰفِرُوۡنَ ﴿۳۲﴾

(सूरः तौबा : 32)

अनुवाद :वे अपने मुँह से अल्लाह के प्रकाश को बुझाना चाहते हैं, और अल्लाह (बाकी सब) को अस्वीकार करता है, सिवाय इसके कि वह अपने प्रकाश को पूर्ण कर दे, यद्यपि इनकार करनेवालों को यह अप्रिय ही क्यों न लगे।

वर्ष- 10
अंक - 24-25
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15-22 ज़ुल् हज्जा, 1446-47 हिज्री कमरी, 19-12 अहसान 1404 हिज्री शम्सी, 12-19 जून 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोअता के युद्ध की घटनाएँ वर्णित करते हुए कहा कि अल्लाह ने मेरे लिए पृथ्वी को ऊँचा कर दिया, यहाँ तक कि मैंने वहाँ की युद्धभूमि को अपनी आँखों से देख लिया।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मोअता के दिन मेरे हाथ में नौ तलवारें टूट गई थीं, और अंत में केवल एक यमनी चौड़ी तलवार ही शेष बची थी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोअता के युद्ध से लौटने वाले साथियों के विषय में फ़रमाया ये लोग कायर या भागने वाले नहीं, बल्कि साहसी योद्धा हैं, जो शत्रु पर फिर से पलटकर आक्रमण करने वाले हैं।

पैग़म्बर के जीवनचरित में युद्धों और सैन्य अभियानों का यह उल्लेख हमें यह सिखाता है कि वर्तमान भारत-पाकिस्तान संघर्ष की पृष्ठभूमि में मुसलमानों को विशेष रूप से एहतियात बरतनी चाहिए। उन्हें उग्र और भड़काऊ टिप्पणियाँ करने से बचना चाहिए तथा समाज में शांति और सौहार्द का संदेश फैलाना चाहिए।

साथ ही, फिलस्तीन में पीड़ित और शोषित लोगों के लिए दुआएं और सहानुभूति का का निवेदन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-मोअता का विवरण इस प्रकार है। हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई (रज़ियल्लाहु अन्हु) वर्णन करते हैं कि मैं उन लोगों के साथ सफर पर था जो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के नेतृत्व में निकले थे। मुझे यमन के लोगों में से एक व्यक्ति मिला, जिसके पास सिर्फ़ एक तलवार थी। एक मुसलमान ने ऊँट ज़बह किया। उस व्यक्ति ने उससे कुछ खाल मांगी, जो उसने उसे दे दी। फिर उसने उस खाल को ढाल की तरह बना लिया।

इसके बाद हम सफर पर रवाना हुए। रास्ते में हमारी मुठभेड़ रोमी सेना से हो गई। उनके बीच एक व्यक्ति था जो भूरे घोड़े पर सवार था, जिसके पास सुनहरी ज़ीन (काठी) और सुनहरे हथियार थे। वह रोमी मुसलमानों को ललकार रहा था। तभी वह यमनी व्यक्ति एक चट्टान के पीछे से आकर सामने आया और उसने उस दुश्मन के घोड़े की पिंडलियाँ काट दीं। फिर लड़ाई शुरू हुई। रोमी सवार नीचे गिर गया। वह यमनी मुसलमान उसकी ओर झपटा, उस पर सवार हुआ और तलवार से उसे मार डाला। उसने दुश्मन का घोड़ा और हथियार भी अपने कब्ज़े में ले लिए।

जब अल्लाह ने मुसलमानों को विजय प्रदान की, तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उस व्यक्ति को संदेश भेजा जिसने रोमी को मारा था, और उससे कहा कि वह माल जमा करे (यानि माल-ए-ग़नीमत जमा करे)।

हज़रत औफ़ बताते हैं कि मैं हज़रत ख़ालिद के पास गया और कहा, "क्या आपको मालूम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल के बारे में क्या फैसला किया है?" चूंकि हज़रत ख़ालिद नए-नए मुसलमान हुए थे, इसलिए शायद उन्हें यह न मालूम हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फैसला यह है कि जो व्यक्ति दुश्मन को मारे, उसका सामान उसी का हक़ होता है।

हज़रत ख़ालिद ने जवाब दिया, "हाँ, मुझे पता है, लेकिन मैंने यह समझा कि उसने जो सामान लिया है, वह उससे कहीं ज़्यादा है जितना उसे मिलना चाहिए था।"

हज़रत औफ़ कहते हैं कि मैंने कहा, "आप यह सामान उस व्यक्ति को वापस कर दें, वरना मैं यह मामला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश करूँगा।" लेकिन हज़रत ख़ालिद ने इंकार कर दिया। फिर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए। मैंने वह पूरा वाकया बयान किया, और हज़रत ख़ालिद का रवैया भी अर्ज़ किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ालिद से पूछा, "तुमने क्या किया?" उन्होंने जवाब दिया, "मैंने उसे बहुत ज़्यादा माल समझा और इसलिए मैंने कुछ हिस्सा उससे वापस ले लिया।"

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

इस पर आपने फ़रमाया, "जो कुछ तुमने उससे लिया था, वह वापस कर दो।"

हज़रत औफ़ ने कहा, "ख़ालिद! अब लो उससे वह सामान। अब तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फैसला हो गया है कि वह उसका हक़ है। क्या मैंने तुम्हें पहले ही नहीं कहा था कि वह वापस कर दो?"

जब हज़रत औफ़ यह बात कह रहे थे, तभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुन लिया और पूछा, "क्या हो रहा है?" फिर मैंने पूरा मामला बयान किया और यह भी बताया कि मैंने पहले ही ख़ालिद से कहा था कि सामान वापस करो, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया था।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ हो गए और फ़रमाया, "ख़ालिद! अब वह सामान वापस मत करना।" आपने अपना पहला हुक्म बदल दिया। फिर आपने शिक्षाप्रद अंदाज़ में फ़रमाया, "क्या तुम मेरे अधिकारियों को ऐसी स्थिति में छोड़ना चाहते हो कि तुम्हें केवल उनके फैसलों का अच्छा पहलू मिले और उनका गंदा हिस्सा उन पर छोड़ दो? जब कोई अमीर (नेता) बना दिया गया, तो फिर तुम उस पर उंगली उठाओ कि उसका फैसला ग़लत है। इस तरह उसकी अच्छाइयाँ तुम्हारे नाम हों और यदि कुछ ग़लत हुआ तो उसका दोष उस पर आ जाए।

यह तरीका उचित नहीं है। अब जब तुमने मुझे सब कुछ बता दिया है, तो मैं अपना पहला आदेश वापस ले रहा हूँ, और जो ख़ालिद ने किया वह सही किया।"

यहाँ पर नेतृत्व की गरिमा बनाए रखना ज़रूरी था, इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले वाला फैसला वापस लिया और ख़ालिद के क़दम की तस्दीक की।

हज़रत जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि ग़ज़वा-ए-मोअता में कुछ मुसलमान शहीद हो गए थे और मुसलमानों को मुशरिक़ों से कुछ माल-ए-ग़नीमत प्राप्त हुआ। उस सामान में एक अंगूठी भी थी। एक व्यक्ति ने वह अंगूठी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश की। मैंने उससे कहा कि यह अंगूठी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अता की है।

हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि मैंने जंग-ए-मोअता में भाग लिया। रोमियों में से एक व्यक्ति ने मुझे मुबारज़त (एकल युद्ध) की चुनौती दी। मैंने उसे मार गिराया। उसने एक लोहे की टोपी (हेलमेट) पहनी हुई थी जिसमें याक़ूत जड़े हुए थे। मेरा उद्देश्य वही याक़ूत थे, जिन्हें मैंने निकाल लिया। जब मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुँचा, तो मैंने वे याक़ूत पेश कर दिए। आपने वे मुझे अता कर दिए। हज़रत ख़ुज़ैमा कहते हैं कि मैंने उन्हें हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) के दौर में एक सौ दीनार में बेचा और उस रकम से एक खजूरों का बाग़ खरीदा।

हाफ़िज़ इब्न कसीर लिखते हैं कि इन रिवायतों से स्पष्ट होता है कि मुसलमानों ने न केवल माल-ए-ग़नीमत प्राप्त किया था, बल्कि वे पराजित भी नहीं हुए थे। यह सिर्फ़ एक सैन्य रणनीति थी जिसके तहत वे लौटे थे।

उन्होंने दुश्मन के सरदारों से माल छीना और उनके नेताओं को क़त्ल किया।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि जंग-ए-मोअता के दिन मेरे हाथ में नौ तलवारें टूट गईं, और अंत में केवल एक यमनी चौड़ी तलवार ही मेरे पास बची रही।

हज़रत अल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ़ कहते हैं कि इस रिवायत से यह स्पष्ट होता है कि मुसलमानों ने मुशरिकों को बड़ी संख्या में मार डाला था, वरना वे मुशरिकों की इतनी विशाल सेना से सुरक्षित निकल नहीं सकते थे। मुसलमानों की संख्या तीन हज़ार थी जबकि मुशरिकों की संख्या दो लाख से अधिक थी। यह अपने आप में मुसलमानों की श्रेष्ठता का एक स्थायी प्रमाण है। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

इब्न इशाक ने वर्णन किया है कि हज़रत क़ुत्बा बिन क़तादा मुसलमानों के दाहिने दल (मयमना) के सेनापति थे। उन्होंने मालिक बिन राफ़िला पर हमला किया, जो ईसाई बंजारा क़बीलों का प्रमुख था, और उन्हें मार डाला। हज़रत क़ुत्बा इस पर गर्व से अरबी के छंदों में कहा करते थे कि मैंने राफ़िला बिन अराज़ के बेटे को ऐसा भाला मारा जो उसकी देह में गहरे तक उतर गया और फिर वह भाला टूट गया। जब मैंने उसकी गर्दन पर ज़ोरदार वार किया तो वह इस तरह झुक गया जैसे सलम नामक काँटेदार पेड़ की शाख झुक जाती है। हमने उसके चचेरे भाइयों की स्त्रियों को इस प्रकार हाँका जैसे जानवरों को हाँका जाता है।

हज़रत अस्मा बिन्त उमैस (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने बयान किया कि जिस दिन हज़रत जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उनके साथी शहीद हुए, उस दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे घर तशरीफ़ लाए। आपने फ़रमाया: "मेरे पास जाफ़र के बेटों को ले आओ।" मैंने उन्हें हाज़िर कर दिया। आपने उन्हें अपने सीने से लगाया और आपकी आँखों से आँसू बहने लगे। मैंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों, आप क्यों रो रहे हैं? क्या आपको हज़रत जाफ़र और उनके साथियों के बारे में कोई सूचना मिली है?" आपने फ़रमाया: "हाँ, आज उनके सिरों पर शहादत का ताज रखा गया है।"

वह कहती हैं कि मैं उठकर रोने लगी और औरतें मेरे पास जमा हो गईं। फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घरवालों के पास चले गए और फ़रमाया: "आले-जाफ़र (जाफ़र के घरवालों) को मत भूलना। उनके लिए कुछ खाना तैयार करना क्योंकि आज उनके शौहर की शहादत ने उन्हें व्यस्त कर दिया है।" अर्थात आपने लोगों को निर्देश दिया कि आज उनके घर खाना भेज देना चाहिए।

हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और आपने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत इब्न रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की खबर सुनाई। वे उसी दिन शहीद हुए थे, जबकि ज़ाहिरी रूप में अभी उनकी शहादत की कोई सूचना मदीना नहीं पहुँची थी। आपने फ़रमाया: "अब हज़रत ज़ैद ने इस्लाम का झंडा उठाया है।" जब आप बयान कर रहे थे, उसी वक्त आपने बताया कि वे शहीद हो गए। फिर हज़रत जाफ़र ने झंडा उठाया, वे भी शहीद हो गए। फिर हज़रत अब्दुल्लाह इब्न रवाहा ने झंडा थामा और वे भी शहीद हो गए।

आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। फिर आपने फ़रमाया: "अब इस्लाम का झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने थाम लिया है और अल्लाह ने मुसलमानों को विजय प्रदान की है।"

एक अन्य रिवायत में आता है कि हज़रत यअला बिन उमय्या (रज़ियल्लाहु अन्हु) ग़ज़वा-ए-मोअता की खबर लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया: "अगर तुम चाहो तो मुझे पहले बता दो, या चाहो तो मैं तुम्हें बता दूँ कि क्या हुआ।" फिर आपने फ़रमाया: "अल्लाह ने मुझे सारी खबर दे दी है। तुम पहले बताना चाहते हो या मैं बताऊँ?" उन्होंने अर्ज़ किया: "ऐ अल्लाह के रसूल! आप ही मुझे बताइए।"

आपने उन्हें सारा घटनाक्रम बता दिया। उन्होंने कहा: "उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, आपने एक शब्द भी नहीं छोड़ा, हर बात वही है जो मैंने देखी।"

आपने फ़रमाया: "अल्लाह ने मेरे लिए ज़मीन को ऊपर उठा दिया यहाँ तक कि मैंने उनका मैदान-ए-जंग देख लिया।"

मैंने उन्हें स्वप्न में देखा कि वे सोने के पलंगों पर विराजमान थे। मैंने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न रवाहा का पलंग देखा, उसमें थोड़ा झुकाव था। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों है? मुझे बताया गया कि हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र बिना किसी संकोच के सीधे आगे बढ़े, जबकि अब्दुल्लाह को थोड़ी हिचकिचाहट हुई थी, फिर वे भी आगे बढ़े। उनके इस संदेह का उल्लेख पिछले ख़ुत्बे में हो चुका है, जिसमें उन्होंने स्वयं कहा था कि उन्हें पहले ख्याल आया कि शायद उन्हें लड़ना नहीं चाहिए।

एक और रिवायत में आता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जाफ़र, ज़ैद और इब्न रवाहा को मेरे सामने पेश किया गया, वे मोअता के शिविर में थे। मैंने ज़ैद और इब्न रवाहा को देखा कि उनकी गर्दनें झुकी हुई थीं, जबकि हज़रत जाफ़र सीधे खड़े थे, उनमें कोई झुकाव नहीं था।"

मुझे बताया गया कि जब मौत का समय आया तो ज़ैद और इब्न रवाहा ने थोड़ी देर के लिए पीछे हटने की कोशिश की, लेकिन जाफ़र ने ऐसा नहीं किया। अल्लाह ने उन्हें उनके दोनों बाजुओं के बदले दो पंख अता किए हैं जिनके ज़रिये वे जन्नत में जहाँ चाहें जाते हैं।

एक और रिवायत के अनुसार, हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) जब हज़रत जाफ़र के बेटे अब्दुल्लाह को सलाम करते तो कहा करते: "अस्सलामु अलैक या इब्ना ज़िल-जनाहैन" "ऐ दो पंखों वाले के बेटे! तुम पर सलामती हो।"

(संदर्भ: सब्लुल हुदा व रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 151 से 154, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

कुछ मसलों को बयान करते हुए, एक विवरण में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि, "जो मुश्किल मसले होते हैं, उन्हें कुछ लोग समझते हैं और कुछ नहीं समझते, और इसकी ज़रूरत होती है कि दूसरे लोग जो बा-ख़बर होते हैं, उन्हें वो मसले समझाएँ, चाहे इस वजह से कि वो खुद ग़ौर नहीं करते, इसलिए नहीं समझते, या इस वजह से कि उनके दिल किसी गुनाह की वजह से ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल अपनी ओर खींचने के लिए तैयार नहीं होते।"

ये मुश्किल विषय आमतौर पर दो किस्म के होते हैं। एक, इल्मी विषय जो बारीक फ़लसफ़े पर मबनी होते हैं। मसलन, तौहीद का एक हिस्सा तो हर कोई समझ सकता है कि ख़ुदा एक है, लेकिन आगे जो सूफ़ियाना बारीकियाँ हैं, कि किस तरह इंसान के हर फ़ेअल (कर्म) पर ख़ुदा तआला की तौहीद का असर पड़ता है, उसके लिए एक 'आरिफ़' की ज़रूरत होगी। और ये मसले दूसरे को समझाने के लिए कोई आलिम (ज्ञानी) चाहिए होगा। हर शख़्स ये बारीकियाँ नहीं निकाल सकता, लेकिन इतनी बात ज़रूर समझ लेगा कि क़ुरआन किसी दूसरे ख़ुदा का क़ाइल नहीं।

ख़ुदा तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि ख़ुदा एक है।

दूसरे, ये मुश्किलात उन मुतालिबात (विचारों) से ताल्लुक रखती हैं जो इल्मी तो नहीं, मगर ऐसी ज़बान में बयान किए गए हैं जिन्हें तश्बीह (उपमा) और इस्तिआरा (रूपक) कहते हैं। कुछ मसले इल्मी नहीं होते, कुछ अहम फ़िकरे और मुहावरे होते हैं जिन्हें लोग समझ नहीं सकते। अगर उन्हें बयान किया जाए तो कुछ लोग उसका उलटा मतलब ले लेते हैं।

आप बयान करते हैं कि "...आम लोग इस ज़बान को न जानने की वजह से उसके ऐसे मानी कर लेते हैं जो हक़ीक़त पर मबनी नहीं होते।" आपने मिसाल दी है कि, "मसलन, रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक वाक़िआ पेश आया जब शाम की जंग में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को सालार-ए-लश्कर बना कर भेजा और फ़रमाया कि अगर ज़ैद शहीद हो जाएँ तो जाफ़र बिन अबी तालिब कमान ले लें और अगर जाफ़र शहीद हो जाएँ तो अब्दुल्लाह बिन रावाहा कमान ले लें।"

तो जैसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, वैसा ही वाक़िआ हुआ और हज़रत ज़ैद, हज़रत जाफ़र और हज़रत अब्दुल्लाह तीनों शहीद हो गए और हज़रत खालिद बिन वलीद ने लश्कर को अपनी कमान में लेकर सलामती से वापस ला दिया।

जब मदीना में ये ख़बर पहुँची, तो जिन औरतों के शौहर मारे गए थे या जिन माँ-बाप के बेटे उस जंग में शहीद हुए थे, उन्होंने शरीअत की हद तक रोना शुरू कर दिया। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महज़ इज़हार-ए-अफ़सोस के लिए, न कि ये चाहने के लिए कि औरतें इकट्ठा होकर रोना शुरू कर दें, फ़रमाया, "जाफ़र पर तो कोई रोने वाला नहीं।" आप उनके रिश्तेदार थे। आपने अफ़सोस का इज़हार किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "मेरे नज़दीक इस फ़िकरे से आप का यह मंशा हरगिज़ नहीं था कि कोई जाफ़र को रोए, बल्कि मतलब यह था कि हमारा भाई भी आख़िर इस जंग में मारा गया है, जब हम नहीं रोए तो तुम्हें भी सब्र करना चाहिए।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह समझाना चाहते थे "क्योंकि हज़रत जाफ़र के रिश्तेदार वहाँ या तो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे या हज़रत अली, और ये जिस पायेदार दर्जे के आदमी थे, उनके लिहाज़ से उनकी चीख़ें नहीं निकल सकती थीं।" न रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की और न हज़रत अली की।

उन्हें पता था, सही इदराक था। "पस रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ग़ालिबन इस बात के इज़हार के लिए कि मेरा भाई जाफ़र भी मारा गया मगर मैं नहीं रोया, फ़रमाया, 'जाफ़र पर तो कोई रोने वाला नहीं।'"

अंसार ने जब यह बात सुनी, तो क्योंकि वे रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हर बात को पूरा करने का बेहद शौक रखते थे, उन्होंने अपने-अपने घर जाकर औरतों से कहना शुरू किया कि यहाँ रोना-धोना छोड़ो और जाफ़र के घर चलकर रोओ। इसलिए जब सब औरतें हज़रत जाफ़र के घर में इकट्ठा हो गईं और सब ने एक कोहराम मचा दिया, रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब ये आवाज़ सुनी तो फ़रमाया, "क्या हुआ?" अंसार ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह! आपने जो फ़रमाया था कि जाफ़र पर कोई रोने वाला नहीं, इसलिए हमने अपनी औरतें हज़रत जाफ़र के घर भेज दी हैं और वे रो रही हैं।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मेरा ये मतलब तो नहीं था, जाओ उन्हें मना करो।" मेरा मतलब तो ये था कि "हम नहीं रोए, तुम लोग भी सब्र करो।"

चुनांचे एक शख़्स गया और उसने उन्हें मना किया। वे कहने लगीं, "तुम हमें कौन रोकने वाले हो?" उस शख़्स को उन्होंने कहा, "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो आज अफ़सोस करते हुए फ़रमाया है कि जाफ़र को रोने वाला कोई नहीं और तू हमें मना करता है।"

वह यह जवाब सुनकर फिर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, क्योंकि कुछ लोगों को दूसरों की ज़रा-ज़रा सी बात पहुँचाने का शौक होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उसने ये कहा, तो फ़ौरन आकर उसने रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ कर दिया और कहा, "वे मानती नहीं।" बात मेरी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "उनके सिरों पर मिट्टी डालो।" यह एक मुहावरा है। "मतलब ये था कि छोड़ो और उन्हें कुछ न कहो, ख़ुद ही रो-धो कर ख़ामोश हो जाएँगी।"

मगर उस शख़्स को ख़ुदा दे, उसने अपनी चादर में मिट्टी भर ली और औरतों के सिर पर डालनी शुरू कर दी। उन्होंने कहा, "पागल! क्या करता है?" वह कहने लगा, "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है मिट्टी डालो, इसलिए मैं तो ज़रूर डालूँगा।"

अब एक तसबीही (प्रतीकात्मक) ज़बान है, उसे उस ने अमलन पूरा करना शुरू कर दिया।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस बात का इल्म हुआ, तो उन्होंने उसे डांटा और फ़रमाया, "तू बात को तो समझा ही नहीं। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मंशा तो ये था कि उनका ज़िक्र छोड़ो और जाने दो। वे ख़ुद ही ख़ामोश हो जाएँगी। ये मतलब तो नहीं था कि तुम मिट्टी डालना शुरू कर दो।"

अब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह एक इस्तिआरतन् (रूपक) कलाम था, मगर वह वाक़ई मिट्टी डालने लग गया।

तो कभी-कभी लोग इस्तिआरा समझने की कोशिश नहीं करते। अब यहाँ देखिए, एक मर्द तो नहीं समझा क्योंकि उसमें इतनी अक़्ल नहीं थी, लेकिन हज़रत आयशा ने उसे समझाया।

"और कभी-कभी लोग लफ़्ज़ी मानी ऐसे ले लेते हैं जो हक़ीक़त के ख़िलाफ़ होते हैं, और इस तरह बात कहीं की कहीं पहुँच जाती है।"

(फ़ज़ाएलुल-क़ुरआन (6), अनवारुल-उलूम, जिल्द 14, पृष्ठ 351-353)

इस घटना से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम और इश्क़ का स्पष्ट प्रमाण मिलता है, जिसे हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक और स्थान पर इस प्रकार बयान किया है कि जब सहाबा ने अपनी औरतों को हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर रोने के लिए भेजा, तो इस घटना से उनके दिलों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो मोहब्बत थी, उसका इज़हार होता है। आपने फ़रमाया कि आपके एक वाक्य ने उन्हें यह सोचने का अवसर ही नहीं दिया कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मंशा क्या है, बल्कि उन्होंने तुरंत अपनी औरतों से कह दिया कि अपने ग़म को भूल कर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़म में शरीक हो जाओ। इससे समझा जा सकता है कि उनके दिलों में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कैसा गहरा इश्क़ था कि उन्होंने यह जुमला सुनते ही कि "जाफ़र के घर से तो रोने की कोई आवाज़ नहीं आ रही", यह समझ लिया कि उन्होंने अपने रिश्तेदारों की शहादत पर रोकर गलती की, असली ग़म तो वही है जो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँचा है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह एक छोटा सा वाक़िआ मालूम होता है लेकिन जज़्बात के इज़हार के लिहाज़ से इससे बेहतर मिसालें बहुत कम मिलती हैं। ये वे लोग थे जिनकी ख़िदमात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने थीं, जिनकी क़ुर्बानियाँ हर वक़्त रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़रों के सामने होती थीं और ये लोग रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसी मोहब्बत रखते थे जिसकी मिसाल दुनियावी रिश्तों में नहीं मिलती।

अगर दुनियावी पैमाने से देखा जाए और एहसासात के नज़दीक से देखा जाए, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन लोगों के जज़्बात का ज़्यादा लिहाज़ करना चाहिए था और हमारी निस्बत उनकी मोहब्बत कम होनी चाहिए थी, क्योंकि हम तो बाद के ज़माने की पैदाइश हैं, लेकिन आपने फ़रमाया कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह बेपनाह मोहब्बत, जहाँ तक इंसानी मोहब्बत की हदें जाती हैं, यह गवारा नहीं करती थी कि वह तुम्हारे हौसलों को पस्त होने दें। यानी हम जो बाद के लोग हैं, हमारे हौसलों को भी उन्होंने कभी कमज़ोर नहीं होने दिया।

बल्कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत ने यह भी पसंद नहीं किया कि वह "दरमियानी उम्मत" (अर्थात बाद में आने वाले लोग) के हौसले को पस्त करें। चुनाँचे एक मजलिस में आपने बाद में आने वाले लोगों का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया कि "मेरे भाई जो मेरे बाद आने वाले होंगे, वे ऐसे होंगे..."।

सहाबा को यह सुनकर रश्क (ईर्ष्या नहीं, बल्कि अल्लाह के क़रीब होने की

तमन्ना) हुआ और उन्होंने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! वे भाई हुए और हम नहीं? हम तो आपके साथ रहते हैं, आपने हमें भाई नहीं कहा और उन लोगों को, जो बाद में आने वाले हैं, उन्हें अपना भाई कहा?" आपने फ़रमाया, "तुम मेरे सहाबी हो और वे मेरे भाई हैं। क्या यह तुम्हारे लिए कम नेमत है कि तुम मुझे देख रहे हो और मेरे साथ रहकर दीन की सेवा कर रहे हो?" यह बहुत बड़ी नेमत है जो तुम्हें मिली है। और वह लोग, जो मुझे नहीं देखेंगे, जो मेरे बाद आएंगे, मेरे बारे में भी मुझे कुछ कहने दो, उनके लिए भी मुझे कुछ अल्फ़ाज़ बोलने दो, ताकि उन्हें भी तसल्ली मिले और उनके हौसले भी बुलंद हों।

इस तरह रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाद में आने वालों के हौसलों को भी बुलंद फ़रमाया। चुनाँचे देख लो, रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुम्हारे हौसले कितने बढ़ा दिए हैं कि आपने फ़रमाया: "मैं नहीं जानता कि मेरी उम्मत का पहला हिस्सा बेहतर है या आख़िरी हिस्सा।"

(मआख़ूज़: ख़ुतबात-ए-शूरा, जिल्द 2, सफ़ा 505 से 507, इख़्तेतामी ख़िताब मजलिस-ए-मशावरत 24 मार्च 1940)\

शोहदाए मौअतह के बारे में और भी रिवायतें हैं। अल्लामा इब्न कसीर की किताब बदायह व निहायह में शोहदाए मोअतह का ज़िक्र करने के बाद लिखा गया है कि इन शहीदों की तादाद बारह थी। कुछ रिवायतों में यह तादाद ज़्यादा भी बयान हुई है। लेकिन हर हाल में यह बहुत बड़ा मोजिज़ा है कि दो फौजें आमने-सामने हों, एक की तादाद सिर्फ़ तीन हज़ार हो जो अल्लाह की राह में लड़ रही हो और दूसरी की दो लाख हो। एक लाख रोमी और एक लाख ईसाई। और वे आमने-सामने हों, फिर भी मुसलमानों के केवल बारह अफ़राद शहीद हों या बहुत कम तादाद शहीद हो और कुफ्फार की भारी तादाद जहन्नम वासिल हो जाए।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उस दिन मेरे हाथों में नौ तलवारें टूट गईं, बस एक यमनी तलवार थी जो मेरे हाथ में टिक सकी। इन तमाम तलवारों से न जाने कितने मुश्रिकीन जहन्नम पहुंचे होंगे।

मुसलमानों की वापसी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा उनके इस्तिक़बाल के बारे में लिखा है कि मुसलमान जब वापसी में एक बस्ती के पास से गुज़रे, जहाँ एक क़िला था। जाते हुए वहाँ के लोगों ने एक मुसलमान को शहीद कर दिया था। तो मुसलमानों ने उस क़िले का मुहासरा कर लिया, यहाँ तक कि उन्होंने उसे फ़तह कर लिया। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके सरदारों को क़त्ल किया।

जब मुसलमान मोअतह से लौटे तो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा ने उनका स्वागत किया। लेकिन कुछ लोगों को गुस्सा था कि ये शहीद होकर क्यों नहीं लौटे, कोई फतह तो हासिल नहीं हुई और उन्होंने फौज पर मिट्टी फेंकी और कहा, "ऐ भाग जाने वालो! तुम अल्लाह की राह से पीछे हट आए।" इस पर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"ये भागने वाले नहीं बल्कि कर्रार हैं।" यानी वे दुबारा हमला करने वाले हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब मुसलमान मोअतह से वापस आए तो मैं भी वापस आया। दूसरी रिवायत में वह बयान करते हैं कि हमें शर्मिंदगी महसूस हो रही थी कि हमने रास्ता छोड़ दिया। हमें लगा कि हम वहाँ से भाग आए, हालाँकि दुश्मन खुद पीछे हट गया था और उन्होंने उसका पीछा नहीं किया बल्कि उन्होंने मौके को ग़नीमत समझा और लौट आए और यह एक अच्छी हिकमत-ए-अमली थी। लेकिन कुछ लोगों ने इसे भी रास्ता छोड़ने की तरह समझा।

वह कहते हैं कि हमें शर्म थी कि हमने भागने का रास्ता अख्तियार किया। एक सहाबी कहते हैं कि हमने कहा अगर हम मदीना गए तो हमें क़त्ल कर दिया जाएगा। इसलिए हम रात के वक़्त मदीना में दाख़िल हुए और छुप गए। कुछ इतने शर्मिंदा थे कि रात को दाख़िल हुए और छुप गए। लेकिन कहते हैं कि हमने कहा कि काश! हम रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो जाएँ और माफ़ी माँगें। अगर तो तौबा क़ुबूल हो गई तो बेहतर, वरना हम वापस चले जाएँगे या तो फिर से जंग के लिए जाएंगे या कहीं और चले जाएंगे।

हम फ़ज्र की नमाज़ से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने पूछा, "कौन है?" हमने जवाब दिया, "भागने वाले।" यानी हम खुद शर्मिंदा थे और यह बात कह दी। आपने फ़रमाया, "नहीं, तुम कर्रार हो मैं तुम्हारा हूं, मैं हर मुसलमान का हूं।" इस पर हमने आपके हाथों को चूम लिया।

(सबलुल हुदा व रशाद, जिल्द 6, सफ़ा 154 से 156, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)(ग़ज़वातुन-नबी अबुल कलाम आज़ाद, सफ़ा 177, नाशिर: सिटी बुक पॉइंट, कराची)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ही शफकत का व्यवहार किया।

फिर एक सरिय्या (छोटी सैन्य टुकड़ी की मुहिम) का ज़िक्र है जो "सरिय्या अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु" के नाम से जानी जाती है। यह सरिय्या जमादी-उस-सानी आठ हिजरी में हुआ। कुछ यह भी कहते हैं कि यह सात हिजरी में हुआ। इब्न-इशाक़ के अलावा सभी इस पर सहमत हैं कि यह सरिय्या ग़ज़वा मूतह के बाद हुआ और ग़ज़वा मूतह जमादी-उल-ऊला आठ हिजरी में हुआ था।

इस सरिय्या की वजह यह बनी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खबर मिली कि बनू-क़ुज़ाआह का एक गिरोह मदीना के आस-पास हमला करने के इरादे से इकट्ठा हो रहा है। बनू-क़ुज़ाआह, क़हतानी लोगों का एक क़बीला था जो मदीना से दस दिन की दूरी पर वादी-अल-क़ुरा से आगे आबाद था।

इस सिलसिले में और आगे बयान मिलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी दबिश के लिए हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को रवाना किया। हज़रत अम्र मक्का के एक सरदार 'आस बिन वाइल' के बेटे थे। उन्होंने सात हिजरी में, या एक अन्य रिवायत के अनुसार आठ हिजरी में इस्लाम क़बूल किया था।

हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाहसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे पैग़ाम भेजा कि मैं अपने कपड़े और हथियार ले लूं और फ़रमाया, "ऐ अम्र! मैं चाहता हूँ कि तुम्हें एक लश्कर का अमीर बनाकर भेजूं। अल्लाह तुम्हें माल-ए-ग़नीमत भी देगा और तुम्हारी हिफ़ाज़त भी करेगा।" हज़रत अम्र ने अर्ज़ किया, "मैंने माल की ख़ातिर इस्लाम क़बूल नहीं किया।" इस पर रसूलुल्लाहसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "नेक आदमी के लिए हलाल माल होना क्या ही अच्छी बात है। तुमने तो मंशा नहीं की, लेकिन अगर अल्लाह दे दे तो यह बहुत ही बेहतर है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र की सरपरस्ती में तीन सौ मुहाजिरीन और अंसार का लश्कर तैयार किया जिनमें तीस सवार शामिल थे। आपने हज़रत अम्र को एक सफ़ेद झंडा दिया और एक काला झंडा भी साथ दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र को नसीहत की कि रास्ते में अगर बनू-बली, उज़रा या बल्कैन में से कोई क़बीला मिले तो उन्हें अपने साथ शामिल करने की कोशिश करें।

हज़रत अम्र को जंग में खास महारत हासिल थी और वे युद्ध-कौशल से वाकिफ़ थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें उनकी इसी युद्ध-कला की वजह से अमीर (सेनापति) बनाया था।

(शरह अल-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिया, जिल्द 3, सफ़ा 357-359, 361, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

(असद अल-ग़ाबा, जिल्द 4, सफ़ा 232, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

(फ़र्हंग-ए-सीरत, सफ़ा 237, लफ़्ज़ "क़ुज़ाआह" के तहत)

हज़रत अम्र को इस सरिय्या पर भेजने की एक वजह यह भी थी कि उनकी दादी का ताल्लुक क़बीला बली से था। इसलिए बनू-बली से बेहतर ताल्लुक़ात क़ायम करने के लिए आप एक अच्छा ज़रिया हो सकते थे।

(सीरत इब्न हिशाम, सफ़ा 879, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

इस्लामी लश्कर रवाना हुआ। यह रात को सफ़र करता था और दिन को छिपा रहता था, यहाँ तक कि क़बीला जुज़ाम के इलाक़े में 'सलासिल' नाम के एक चश्मे के पास पहुंच गया। इस चश्मे के नाम पर इस सरिय्या को "सरिय्या ज़ात-उसलासिल" भी कहा जाता है।

(सुबुल अल-हुदा व-अर-रशाद, जिल्द 6, सफ़ा 167, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

मदीना से और फ़ौजी मदद बुलवाने का ज़िक्र भी मिलता है। जब मुसलमान उस चश्मे के पास पहुँचे, तो उन्हें पता चला कि दुश्मन का लश्कर बहुत बड़ा है। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने और मदद के लिए हज़रत राफ़े बिन मकीस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में भेजा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए झंडा तैयार किया और दो सौ मुहाजिरीन व अंसार का लश्कर उनके साथ रवाना किया। हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर भी उनमें शामिल थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा को रवाना करते हुए ताकीद की कि वे हज़रत अम्र के साथ मिल जाएं और एक ही लश्कर बन कर रहें और आपस में कोई मतभेद न करें। मक़सद यह था कि दोनों एकजुट होकर रहें और हज़रत अम्र ही अमीर बने रहें।

तफ़सील में लिखा है कि एक बार मुसलमानों ने आग जलाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी कीं ताकि सर्दी से बचाव कर सकें, लेकिन हज़रत अम्र ने उन्हें आग जलाने से

मना कर दिया। एक रिवायत के मुताबिक़ जब हज़रत अम्र ने आग जलाने से मना किया तो हज़रत उमर को ग़ुस्सा आया और वे उनके पास जाना चाहते थे, लेकिन हज़रत अबू बक्र ने उन्हें रोक दिया और कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें उनकी युद्ध-योग्यता के कारण ही अमीर बनाया है।

(शरह अल-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिया, जिल्द 3, सफ़ा 359-361, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत) (सुबुल अल-हुदा व-अर-रशाद, जिल्द 6, सफ़ा 168, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

हज़रत अम्र जब वापस लौटे तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया कि मैंने आग इसलिए नहीं जलाने दी कि कहीं दुश्मन हमारी कम संख्या देखकर और मदद मंगा कर हम पर हमला न कर दे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी तारीफ़ की।

(अस्सीराह अल-हलबिया, जिल्द 3, सफ़ा 269, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

ख़ैर, तफ्सील में लिखा है कि मुसलमान वहाँ से रवाना हुए, यहाँ तक कि दुश्मन के इलाके में पहुँचकर उसे रौंद डाला और उस पर ग़ालिब आ गए। जब वे उस जगह पहुंचे जहाँ दुश्मन के जमा होने की खबर थी, तो दुश्मन मुसलमानों की ख़बर पाकर भाग गया और बिखर गया। मुसलमानों ने उनका पीछा किया और एक छोटे से गिरोह से मुक़ाबला हुआ, जिसे हराकर वे सब भाग गए।

मुसलमान कुछ दिन वहाँ ठहरे और जहाँ भी दुश्मन के किसी गिरोह की ख़बर मिलती, वहाँ सवार भेजते जो मुक़ाबला करते और बकरियाँ व ऊँट लेकर लौटते। फिर मुसलमान मदीना लौटने के लिए रवाना हो गए। हज़रत अम्र ने आउफ़ बिन मालिक अशजई को रसूलुल्लाहसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में आगे रवाना किया ताकि वापसी, सलामती और जंग की पूरी स्थिति से आपको अवगत कराया जाए।

(सुबुल अल-हुदा व-अर-रशाद, जिल्द 6, सफ़ा 168, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

फिर एक सरीया हज़रत अबू उबैदा बिन ज़राह् रज़ियल्लाहु अन्हु का है। यह सरीया रजब आठ हिजरी में हुआ। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी किताब के अंत में सुझाए गए शीर्षकों में दर्ज किया है कि सरीया हज़रत अबू उबैदा रजब आठ हिजरी, यानी नवम्बर 629 ईस्वी में हुआ।

(सीरत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लेखनी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 840)

इस सरीया के और भी नाम हैं। इसे सरीया सीफ़ुल बहर और सरीया ख़बत भी कहा जाता है। सीफ़ुल बहर का अर्थ है समुद्र का किनारा। क्योंकि इस सरीया में सहाबा लाल सागर (Red Sea) के किनारे पर जाकर ठहरे थे, इसलिए इसे सरीया सीफ़ुल बहर कहा गया। इसे सरीया ख़बत यानी पत्ते खाने वाला लश्कर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस सरीया के दौरान एक समय ऐसा आया कि सहाबा पेड़ों के पत्ते खाने पर मजबूर हो गए थे।

इस सरीया के अमीर हज़रत अबू उबैदा बिन ज़राह् रज़ियल्लाहु अन्हु थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें तीन सौ मुहाजेरीन और अंसार सहाबा का एक लश्कर देकर बनू जुहैना के एक शाख की ओर भेजा। इस लश्कर में हज़रत उमर भी शामिल थे। बनू जुहैना का क़बीला एक स्थान पर आबाद था, जो मदीना से पाँच रातों की दूरी पर समुद्र के किनारे के नज़दीक था। इस सरीया का उद्देश्य यह बयान किया गया है कि मक्का के क़ुरैश का एक काफ़िला जो अनाज लेकर समुद्र किनारे किनारे शाम से मक्का जा रहा था, उस पर जुहैना के एक क़बीले की तरफ़ से हमले का ख़तरा था। यह सुल्हे हुदैबिया का ज़माना था और क्योंकि जुहैना, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हलीफ़ (संधि-साथी) थे, इस कारण आप ने दूरंदेशी से काम लेते हुए एक सुरक्षात्मक दस्ता ऐहतियातन उनकी तरफ़ भेज दिया, ताकि शाम से आने वाले क़ुरैशी काफ़िले से कोई छेड़छाड़ न हो और क़ुरैश को संधि के उल्लंघन का कोई बहाना न मिल सके। यह दस्ते की रवाना करने का मक़सद क़ुरैश के काफ़िले की सुरक्षा करना था ताकि वह उस क़बीले पर जो रास्ते में आबाद था, हमला न कर दे क्योंकि सुल्हे हुदैबिया हो चुकी थी और उसकी हिफ़ाज़त भी फ़र्ज़ थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अहद का पालन करना था, इसलिए आपने यहाँ से तीन सौ आदमियों का एक सैन्य प्रतिनिधिमंडल भेजा कि वे उनकी हिफ़ाज़त करें, ताकि वह यानी क़ुरैश का काफ़िला आराम से वहाँ से गुज़र सके। इससे ज़ाहिर होता है कि ये सहाबा किसी से लड़ने के लिए नहीं गए थे। इसी वजह से पंद्रह दिन से ज़्यादा के क़ियाम में किसी लड़ाई का ज़िक्र नहीं मिलता।

(माख़ूज़: सुबुलुल हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 176, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरुत)(बुख़ारी, जिल्द 9, पृष्ठ 239, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

इस सरीया की रवाना होने और ज़ादे-राह (सामान-ए-सफ़र) के ख़त्म हो जाने के बारे में एक तफ़सील इस तरह बयान की गई है कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो इस सरीया के बारे में बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें भेजा। हम तीन सौ सवार थे। हमारे अमीर हज़रत अबू उबैदा बिन ज़राह् रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हम निकले और अभी कुछ ही रास्ता तय किया था कि ज़ादे-राह खत्म हो गया। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि सबके पास जो तोशा है उसे इकट्ठा किया जाए। जो भी खाना जमा है वह ले आओ। फिर वह जमा किया गया तो कुल दो थैले खजूरों के बने। हज़रत अबू उबैदा हमें हर रोज़ थोड़ा थोड़ा खाने को देते रहे, यहाँ तक कि वह भी खत्म हो गया। फिर हमें एक-एक खजूर मिलती थी। रावी कहते हैं कि मैंने हज़रत जाबिर से पूछा कि एक खजूर तुम्हारी भूख कैसे मिटाती होगी? उन्होंने कहा कि जब वह भी न रही, तब हमें उसकी ग़ैर मौजूदगी का एहसास हुआ। उस समय जब बिलकुल कुछ न रहा, तो हमें वह एक खजूर भी ग़नीमत लगने लगी। एक रिवायत के अनुसार हज़रत जाबिर ने बताया कि हम पूरा दिन उसी एक खजूर को चूसते रहते और फिर पानी पी लेते। हमारे लिए रात तक यही काफ़ी होता था

हज़रत जाबिर बयान करते हैं कि हम क़ुरैश के व्यापारिक काफ़िले की हिफ़ाज़त के लिए निगरानी में बैठ गए। समुद्र के किनारे हम आधा महीना ठहरे रहे और हमें कड़ी भूख लगी यहाँ तक कि हमने पत्ते भी खाए। इसी वजह से इस फ़ौज का नाम जैशुल ख़बत यानी पत्ते खाने वाली सेना रखा गया। कहते हैं कि हमारी इस खुराक की वजह से हम बहुत कमज़ोर हो गए थे और हमारे होंठ व मुंह के इर्दगिर्द ज़ख्मी हो गए थे। यहाँ तक कि एक शख़्स ने कहा कि अगर इस हालत में हमारा दुश्मन से सामना हो जाता तो हम इस मुसीबत की वजह से जो हम पर गुज़र रही थी, कोई हरकत भी न कर पाते और मुकाबला भी न कर पाते।

खुराक के लिए एक जगह यहाँ ऊंटों के ज़बह करने का ज़िक्र भी बयान हुआ है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्होबयान करते हैं कि लश्कर में एक शख़्स था जिसने लोगों के खाने के लिए तीन दिन तीन-तीन ऊँट ज़बह किए। फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्होने उसे रोक दिया।

(सुबुलुल हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 176, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत)

(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत सीफ़ुल बहर, हदीस 4360, 4361, 4362) (सहीहुल बुख़ारी, किताबुश शिरकह, बाब फीत्तआम..., हदीस 2483)

सीरत की पुस्तकों से पता चलता है कि वह व्यक्ति हज़रत कैस बिन सअद थे। हज़रत कैस ने कहा, "कौन मुझसे एक ऊँट के बदले खजूरें ख़रीदेगा? ऊँट मैं यहीं पर ज़बह (बलि) कर दूँगा, लेकिन उसकी क़ीमत मदीना जाकर अदा करूँगा।" अर्थात्, उन्होंने सहचरों की भूख को देखकर यह कहा कि मैं ऊँट ख़रीदकर यहीं काट देता हूँ ताकि खाने की व्यवस्था हो सके। उस समय हज़रत उमर मौजूद थे। उन्होंने कहा, "यह युवक आश्चर्यजनक है इसके पास स्वयं कुछ भी नहीं और दूसरों की संपत्ति में लेन-देन कर रहा है। यह घर जाकर भुगतान कहाँ से करेगा? इसका कोई बाग़ भी नहीं है।"

हज़रत कैस को जुहैना कबीले का एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उससे कहा, "मुझे ऊँट बेचो।" फिर उन्होंने उस कबीले से ऊँट ख़रीदे और कहा, "मैं इसकी कीमत मदीना में खजूरों के रूप में चुका दूंगा।" उस व्यक्ति ने कहा, "मैं तो नहीं जानता कि आप कौन हैं?" हज़रत कैस ने कहा, "मैं कैस बिन सअद बिन उबादा हूँ।" उस व्यक्ति ने कहा, "आपने अपने वंश का परिचय देकर मुझे परिचित करवा दिया। मेरे और मदीना के प्रमुख सअद के बीच मित्रता है।"

हज़रत कैस ने उससे पाँच ऊँट ख़रीदे, पाँच वसक (लगभग 750 किलो) खजूरों के बदले। उस व्यक्ति ने कहा, "गवाह और ज़मानत भी होनी चाहिए।" तब कुछ प्रवासी और मदीना के साथी (मुहाजिर और अंसार) गवाह बन गए। हज़रत उमर ने गवाही देने से इंकार कर दिया और कहा, "खजूरों की बात हो रही है, जबकि यह संपत्ति इसकी नहीं, बल्कि इसके पिता की है। बाग़ तो इसके पिता के हैं, यह कहाँ से देगा?"

ख़ैर, जब यह दल मदीना वापस लौटा, तो हज़रत सअद ने हज़रत कैस से पूछा, "जब साथी भूखे थे, तो तुमने क्या किया?" उन्होंने कहा, "मैंने एक ऊँट काटा।" पूछा, "फिर क्या किया?" बोले, "फिर एक और ऊँट काटा।" फिर पूछा, "उसके बाद?" उन्होंने फिर यही उत्तर दिया। इस पर पूछा गया, "फिर क्या हुआ?" तो हज़रत कैस ने कहा, "फिर मुझे मना कर दिया गया।" पूछा, "किसने मना किया?" उत्तर मिला,

"हज़रत अबू उबैदा ने।" फिर पूछा गया, "क्यों?" उन्होंने बताया, "उन्होंने कहा कि तुम्हारे पास खुद का कुछ नहीं, यह सब तुम्हारे पिता की संपत्ति है।"

तब हज़रत सअद ने कहा, "मैं तुम्हें चार बाग़ देता हूँ।" इस पर उनके पिता बहुत प्रसन्न हुए और कहा, "इन चारों में से सबसे छोटे बाग़ से भी तुम्हें पचास वसक खजूरें मिलेंगी।" यह बड़ी माला होती है, कई सौ किलो। हज़रत सअद ने एक लिखित दस्तावेज़ तैयार करवाया और हज़रत अबू उबैदा आदि को गवाह बनाया।

वह व्यक्ति, जिसने ऊँट बेचे थे, हज़रत कैस के साथ मदीना आया। हज़रत सअद ने उसे खजूरें दीं, सवारी दी और वस्त्र भी पहनाए। हज़रत जाबिर कहते हैं कि जब यह बात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुँची, तो आपने फ़रमाया: "इस परिवार की उदारता तो उनके स्वभाव में ही समाई हुई है।"

(सुबुल अल-हुदा व अर-रशाद, खंड 6, पृष्ठ 177-178, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)(लुग़ात अल-हदीस, खंड 2, पृष्ठ 648; खंड 4, पृष्ठ 487)

हज़रत सैयद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब इस घटना की व्याख्या में लिखते हैं कि सहचरों ने अत्यधिक भूख की स्थिति में भी अत्यंत धैर्य रखा और न किसी काफिले से भोजन माँगा, न किसी बस्ती में हस्तक्षेप किया। यह प्रमाण है कि यह अभियान किसी युद्ध से संबंधित नहीं था और इन पवित्र आत्माओं ने कभी भी ज़बरदस्ती या अन्याय को उचित नहीं समझा।

(सहीह बुखारी, खंड 9, पृष्ठ 240, प्रकाशित: नज़ारत-ए-इशाअत)

बहरहाल, अल्लाह तआला ने भी उनकी भूख मिटाने के लिए एक विशेष प्रबंध कर दिया। हज़रत जाबिर इस अभियान के और भी विवरण बयान करते हैं। वे बताते हैं कि समुद्र ने हमारे लिए एक बड़ी मछली (जिसे "अंबर" कहा जाता है) बाहर फेंक दी। यह मछली बहुत विशाल होती है। आप इसे व्हेल मछली कह सकते हैं। अल्लामा अज़हरी के अनुसार अंबर समुद्र की वह मछली होती है जिसकी लंबाई पचास गज़ तक होती है।

हज़रत जाबिर कहते हैं, "हमने उसका मांस लगभग आधे महीने तक खाया, कुछ रिवायतों के अनुसार अठारह दिन या एक महीना तक। वहाँ रहते हुए और लौटने तक हम उसे खाते रहे। उसकी चर्बी शरीर पर मलते थे जिससे हमारी त्वचा में फिर से ताज़गी आ गई। भूख के कारण जो कमजोरी आ गई थी, वह दूर हो गई। उस मछली की आँखें बड़े-बड़े मटकों जैसी थीं। हमने उससे कई बर्तनों भरकर तेल निकाला। उसके बड़े-बड़े टुकड़े काटे और कुछ मांस बाज़ार में बेच भी दिया।"

(किताब अल-अतिमा, खंड 4, पृष्ठ 1398, हदीस संख्या 914, अल्लामा अबूशैख़ अल-असबहानी)

उस मछली की आँख में बैठने के विषय में दो प्रकार की रिवायतें हैं। हज़रत जाबिर कहते हैं कि हम छह लोग उसकी आँख में बैठ गए, जबकि एक दूसरी रिवायत में तेरह लोगों का उल्लेख है। हज़रत अबू उबैदा ने उसकी पसलियों में से एक, और एक अन्य रिवायत के अनुसार दो पसलियाँ निकालीं और उन्हें खड़ा किया। फिर सबसे लंबे व्यक्ति हज़रत कैस को सबसे ऊँचे ऊँट पर बिठाया गया और वे उन पसलियों के बीच से होकर निकल गए, बिना उन्हें छुए।

जब यह दल मदीना पहुँचा, तो हज़रत जाबिर कहते हैं कि हमने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस मछली का ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया: "जो रोज़ी अल्लाह ने भेजी है, उसे खाओ। और अगर कुछ बाक़ी हो तो हमें भी खिलाओ।" फिर उनमें से किसी ने आपको एक हिस्सा दिया और आपने उसे खाया।

(सुबुल अल-हुदा व अर-रशाद, खंड 6, पृष्ठ 177-178, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत

(सहीह बुखारी, किताब अल-मग़ाज़ी, अध्याय: ग़ज़वा सीफ़ अल-बहर, हदीस 4360, 4361, 4362)(निमत अल-बारी, खंड 7, पृष्ठ 747, ज़िया अल-क़ुरआन पब्लिकेशन्स, कराची)

(फ़त्ह अल-बारी, खंड 8, पृष्ठ 100, क़दीमी किताबख़ाना, आरामबाग़, कराची)

(सीरत अल-हलबीया, खंड 3, पृष्ठ 270, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत

इसका यह वर्णन यहीं समाप्त होता है। मेरी तो यह कोशिश थी कि यह जल्दी समाप्त हो जाए ताकि अन्य विषयों की शुरुआत हो सके, लेकिन कुछ जनाज़ों और शहीदों का उल्लेख आता रहा, इस कारण अभी भी इसका कुछ भाग शेष है। फिर अंत में फ़तह मक्का का भी वर्णन आएगा। बहरहाल यह सिलसिला अभी चल ही रहा है।

आज मैं यह भी कहना चाहता हूँ। जैसा कि मैंने पिछले जुमा को भी कहा था। कि पाकिस्तान और भारत के बीच जो युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है, उसके बारे में बहुत अधिक दुआ करें कि आपस में सुलह और शांति का वातावरण स्थापित हो जाए। क्योंकि आजकल जो हथियार युद्धों में प्रयुक्त होते हैं, उनसे आम नागरिक भी मारे जाते हैं और अब जो युद्ध की नई स्थिति बन रही है, उसमें नागरिक हताहत हो रहे हैं।

इसलिए दुआ करनी चाहिए कि दोनों पक्ष सुलह पर राज़ी हो जाएँ और किसी बड़े नुक़सान से बच सकें।

इस संदर्भ में यह बात भी याद रखनी चाहिए कि आजकल सोशल मीडिया पर, इंटरनेट के अन्य माध्यमों पर, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि पर लोग बड़े खुले तौर पर टिप्पणियाँ कर देते हैं और अपनी मर्ज़ी से जो चाहें कह देते हैं, जिससे लाभ कम और हानि अधिक होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी ओर से हम यह दिखा रहे हैं कि हम क्या चाहते हैं।

अहमदियों को इससे परहेज़ करना चाहिए, क्योंकि यह प्रकार का प्रदर्शन लाभ से अधिक हानि का कारण बनता है। यदि किसी को संदेश देने की बहुत तीव्र इच्छा हो, तो शांति और सुरक्षा का संदेश दें।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने भी अपनी ज़िंदगी के अंत में जो "पैग़ाम-ए-सुलह" (शांति का संदेश) लेखन किया था, उसमें आपने यही संदेश दिया था—शांति और मेल-मिलाप का। इसलिए हर अहमदी को इसे स्मरण रखना चाहिए और उसी दिशा में प्रयासरत रहना चाहिए।

अल्लाह तआला सबको निर्दोष जानों की हानि से बचाए। कुछ बड़ी शक्तियाँ भी प्रतीत होता है कि इस स्थिति को हवा देने की कोशिश कर रही हैं। वे चाहती हैं कि दोनों ताक़तें आपस में लड़ें, कमज़ोर हों और उनका हथियार भी बिके। अल्लाह तआला उनके षड्यंत्र से भी बचाए।

इसी प्रकार फ़िलिस्तीन की जनता के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके लिए भी सहूलियतें पैदा करे और वे अपने देश में शांति से रह सकें। लेकिन देखने में तो यही आता है कि शांति की कोई संभावना नहीं है, बल्कि प्रयास यही हो रहा है कि किसी प्रकार उन्हें वहाँ से निकाला जाए और इसमें सभी शक्तियाँ सम्मिलित हो रही हैं।

मुस्लिम देशों को अल्लाह तआला बुद्धिमत्ता प्रदान करे और वे एकजुट हो जाएँ। यदि वे एक हो जाएँ तो बहुत-से मसले हल हो सकते हैं।

यदि विश्व युद्ध हुआ तो कुछ लोगों या देशों का यह विचार ग़लत है कि वे बच जाएँगे। यह युद्ध सभी को अपनी चपेट में ले लेगा। अतः इस ग़लतफ़हमी से हर किसी को बचना चाहिए।

अल्लाह तआला सभी को सुरक्षित रखे। बहरहाल इसका हल, जैसा कि मैं हमेशा कहता हूँ, केवल और केवल यही है कि ईश्वर की ओर झुकें। यही एकमात्र मार्ग है जो उन्हें बचा सकता है। इसके अतिरिक्त कोई और राह नहीं है।

अल्लाह तआला सभी को इस मार्ग पर चलने की तौफ़ीक़ दे।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 30 मई 2025, पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

मुझे तो कम से कम मीर महमूद अहमद साहिब नासिर जैसे किसी का कोई उदाहरण अभी दृष्टिगोचर नहीं होता।

अल्लाह के ख़ज़ाने में तो कोई न्यूनता नहीं है अल्लाह करे कि इस प्रकार के उदाहरण और भी उत्पन्न हों,

और ऐसे ही वफ़ादार, निष्कलंक, तथा धर्मपरायण सहायक अल्लाह तआला ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को प्रदान करता रहे।

कुछ सराया (छोटे पड़ावों या अभियानों) के संदर्भ में हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन-चरित्र का वर्णन

जमाअत के एक बुज़ुर्ग, उच्चकोटि के कर्मशील विद्वान, ख़िलाफ़त के प्रति पूर्ण समर्पित, धर्म के अनुपम सेवक, ख़िलाफ़त के महान सहयोगी और सहायक, प्राणों की आहुति देने वाले, पूर्ण आज्ञाकारी तथा वफ़ादार सुलतान-ए-नसीर

मान्यवर सैयद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर तथा असीरी (कारावास) के दौरान कराची में देहांत पाने करने वाले डॉक्टर ताहिर महमूद साहिब शहीद का पुण्य स्मरण और उनकी ग़ायबाना नमाज़-ए-जनाज़ा।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 मई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अभी मैं सराया (छोटे-छोटे सैन्य अभियान) का उल्लेख करूँगा। जो सामग्री मेरे पास है, उसमें फ़त्ह-ए-मक्का से पहले के कुछ सराया का भी वर्णन प्राप्त होता है। यह एक संक्षिप्त सा विवरण है। इसके बाद दूसरा विषय प्रस्तुत किया जाएगा। सरीया अबू क़तादा अंसारी का उल्लेख मिलता है जो ख़ज़रा की ओर भेजा गया था। यह सरीया शाबान 8 हिजरी में हुआ। इस सरीया के सेनापति हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु थे। ख़ज़रा, मदीना मुनव्वरा के उत्तर-पूर्व में स्थित है और बनू मुहारिब की भूमि में गिना जाता है। इसे तिहामा का क्षेत्र भी माना जाता था जो नज्द में सम्मिलित है। यहाँ बनू ग़तफ़ान की एक शाखा निवास करती थी। बनू ग़तफ़ान निरंतर इस्लाम विरोध में लिप्त रहते थे और मुसलमानों को क्षति पहुँचाने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। नज्द के क्षेत्र ख़ज़रा में रहने वाले बनू ग़तफ़ान, रियासत-ए-मदीना के विरुद्ध शरारतें फैलाने में संलग्न थे।

(स्रोत: "ग़ज़वात व सराया" लेखक: मोहम्मद अज़हर फरीद शाह, पृष्ठ 438, फरीदिया पब्लिशर्स, साहीवाल)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हद्रद असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने हज़रत सुराक़ा बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री से विवाह किया। वे बद्र की लड़ाई में शहीद हो गए थे। मुझे संसार से जो भी कुछ प्राप्त हुआ है, उन सब में वह मुझे सबसे प्रिय था। मैंने उसका महर दो सौ दिरहम निर्धारित किया, जबकि मेरे पास कुछ भी न था जो मैं उसे दे सकता। मैंने कहा कि इस महर की अदायगी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही करेंगे। मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँचा और इस विषय में बात की। आपने पूछा, "तुमने कितना महर तय किया है?" मैंने कहा, "दो सौ दिरहम। ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी सहायता करें इस महर की अदायगी में।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "अभी मेरे पास कोई वस्तु नहीं जिससे मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ, लेकिन मेरा इरादा है कि मैं अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु को कुछ आदमियों के साथ एक सरीया में भेजूँ। क्या तुम उसमें शामिल होना चाहते हो? मुझे आशा है कि अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी पत्नी का महर ग़नीमत (युद्ध-लाभ) के रूप में प्रदान करेगा।" मैंने कहा, "ठीक है।" फिर हम निकले और हमारी संख्या कुल सोलह थी। हज़रत अबू क़तादा हमारे अमीर थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें नज्द की ओर क़बीला ग़तफ़ान की दिशा में भेजा। आपने हिदायत दी: "रात को चलना, दिन में छिपे रहना, अचानक हमला करना और स्त्रियों और बच्चों की हत्या नहीं करना।"

फिर हम निकले, यहाँ तक कि ग़तफ़ान के एक ओर पहुँच गए।

(स्रोत: किताब "अल-मग़ाज़ी", खंड 2, पृष्ठ 224, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरुत)

जब अंधेरा छा गया तो हज़रत अबू क़तादा ने हमें ख़ुतबा (उपदेश) दिया और अल्लाह तआला से डरने की वसीयत की। आपने हमें दो-दो आदमियों की जोड़ियों में बाँट दिया और कहा कि "हर व्यक्ति अपने साथी से अलग न हो जब तक कि वह शहीद न कर दिया जाए या मुझे उसकी सूचना न दे। ऐसा कोई व्यक्ति मेरे पास न आए जिससे मैं पूछूँ और वह कहे, 'मुझे अपने साथी के बारे में पता नहीं'। साथ-साथ रहना आवश्यक है। और जब मैं तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहूँ तो तुम भी कहो और जब मैं हमला करूँ तो तुम भी हमला करना, लेकिन पीछा करते हुए दूर तक न जाना। यदि दुश्मन भाग जाए तो उसे जाने देना।"

फिर हमने वहाँ उपस्थित लोगों का मोहासरा (घेरा) कर लिया। हज़रत अबू क़तादा ने अपनी तलवार मयान (नीम) से निकाली और तकबीर कही, हमने भी अपनी तलवारें निकालीं और तकबीर कही। फिर हमने वहाँ मौजूद लोगों पर आक्रमण कर दिया।

(स्रोत: "सुबुलुल-हुदा वल-रशाद", खंड 6, पृष्ठ 185-186, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरुत, 1993 ई.)

कहते हैं कि अचानक मैंने देखा कि उनमें से एक लंबा-चौड़ा व्यक्ति नंगी तलवार लहराता हुआ धीरे-धीरे चल रहा था और कह रहा था, "ऐ मुसलमान! आओ जन्नत की ओर।" मैं उसके पीछे चल पड़ा। वह एक काफिर था, और तंज़िया (व्यंग्यात्मक) अंदाज़ में कह रहा था कि "जन्नत चाहिए ना तुम्हें, तो आओ जन्नत की ओर!" वह "जन्नत, जन्नत" कहकर हमारा मज़ाक उड़ा रहा था। मुझे अंदेशा हो गया कि वह मुड़कर आएगा। मैं उसके पीछे निकल पड़ा। मेरा साथी कहने लगा, "दूर मत जाना, हमारे अमीर ने हमें किसी के पीछे निकलने से मना किया है।" बहरहाल, कहते हैं कि मैंने उसे पकड़ लिया और उसकी नंगी पीठ की ओर तीर चलाया। उसने फिर तंज़िया लहजे में कहा, "ऐ मुसलमान! अब तो जन्नत के और क़रीब हो गए हो।" मैंने फिर तीर चलाया और उसे क़त्ल कर दिया। मैंने उसकी तलवार ले ली।

मेरा साथी मुझे पुकार रहा था कि "तुम कहाँ चले गए थे?" अल्लाह की क़सम, मैं अबू क़तादा की तरफ़ गया। उन्होंने मुझसे तुम्हारे बारे में पूछा तो मैंने उन्हें बता दिया। मैंने पूछा, "क्या अमीर ने मेरे बारे में पूछा?" उसने कहा, "हाँ, और वे तुम पर और मुझ पर नाराज़ थे।" फिर उसने बताया कि मुसलमानों ने माल-ए-ग़नीमत जमा कर लिया है और दुश्मनों के सरदारों को क़त्ल कर दिया गया है। तब मैं हज़रत अबू

क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुँचा, तो आपने मुझे डाँटा। मैंने कहा, "मैंने एक ऐसे आदमी को क़त्ल किया जिसका मामला कुछ यूँ था, और वह इस तरह बातें कर रहा था।"

फिर हम जानवरों को हाँक लाए और औरतों को सवार किया। हमारी तलवारें ज़ीन (पालान) के साथ लटकी हुई थीं। जब सुबह हुई, तो मेरे ऊँट से कुछ बूंदें टपक रही थीं। एक औरत जो हिरन की तरह बार-बार पीछे मुड़कर देख रही थी और रो रही थी, मैंने उससे पूछा, "तुम क्या देख रही हो?" उसने कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं एक आदमी को देख रही हूँ। अगर वह ज़िंदा होता तो हमें तुमसे बचा लेता।" मेरे दिल में ख्याल आया कि शायद यह वही आदमी है जिसे मैंने मारा था और यह उसकी ही तलवार है जो ज़ीन से लटकी हुई है। वह कहने लगी, "अल्लाह की क़सम! यह उसकी तलवार की मयान (नीम) है।" उसके पास उसकी तलवार की मयान थी। उसने कहा, "इसे मयान में डालकर देखो, अगर तुम सच्चे हो।" मैंने उसे मयान में डाला तो वह पूरी तरह फिट आ गई। तब वह औरत ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। फिर हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ऊँट और बकरियाँ लेकर हाज़िर हुए।

(स्रोत: किताब अल-मग़ाज़ी, खंड 2, पृष्ठ 224–225, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरूत)

एक रिवायत के अनुसार, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम इस मुहिम में पंद्रह रातें बाहर रहे और दो सौ ऊँट, एक हज़ार बकरियाँ और बहुत से क़ैदी लाए। माल-ए-ग़नीमत से ख़ुम्स (पाँचवाँ हिस्सा) अलग किया गया और हर एक के हिस्से में बारह ऊँट आए।

(स्रोत: सुबुलुल-हुदा वल-रशाद, खंड 6, पृष्ठ 187, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरूत, लेबनान, 1993)

एक ऊँट को दस बकरियों के बराबर माना गया। एक दूसरी रिवायत के अनुसार, इस सरीया में दो सौ ऊँट, दो हज़ार बकरियाँ और बहुत से क़ैदी ग़नीमत में प्राप्त हुए।

(स्रोत: अस्सीरतुल-हल्बिया, खंड 3, पृष्ठ 273, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरूत)

(स्रोत: अत्-तबक़ातुल-कुब्रा, खंड 2, पृष्ठ 101, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरूत)

फिर एक और वर्णन है। सरीया हज़रत अबू क़तादा की ओर वादी 'इज़्म' की तरफ़। यह सरीया रमज़ान 8 हिजरी (जनवरी 630 ईस्वी) में हुआ। इज़्म मदीना से 36 मील पूर्व की ओर, नज्द के इलाके में एक घाटी है, जहाँ ग़तफ़ान की एक शाखा बनू अशजअ आबाद थी।

इस सरीया का कारण यह था कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़त्ह-ए-मक्का के लिए मक्का की ओर कूच का इरादा किया, तो आपने हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु को वादी इज़्म की ओर रवाना किया, ताकि लोगों को यह गुमान हो कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का नहीं बल्कि इज़्म की ओर रवाना हो रहे हैं, क्योंकि मक्का दक्षिण दिशा में था जबकि इज़्म पूरब की ओर था।

एक रिवायत के अनुसार, इस सरीया के क़ायद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हद्रद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हज़रत अबू क़तादा के साथ आठ सहाबी थे, जिनमें से एक हज़रत मुहल्लिम बिन जस्सामा लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हद्रद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब हम वादी इज़्म पहुँचे, तो आमिर बिन अज़बत अशजई हमारे पास से गुज़रा। उसने हमारे पास आकर इस्लामी तरीक़े से सलाम किया। इस पर सहाबा ने उस पर हाथ उठाने से परहेज़ किया क्योंकि उसने सलाम किया था और शरीअत की शिक्षा यही थी कि ऐसे व्यक्ति को नुकसान न पहुँचाया जाए। लेकिन हज़रत मुहल्लिम का उस व्यक्ति से पहले से कोई झगड़ा था, इसलिए उन्होंने आमिर बिन अज़बत पर हमला करके उसे क़त्ल कर दिया और उसका सामान तथा ऊँट अपने कब्जे में ले लिया।

इसके अतिरिक्त, सहाबा का किसी अन्य दल से सामना नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें सिर्फ़ मुशरिकीन (बहुदेववादियों) की तवज्जोह हटाने के लिए भेजा गया था। अतः वे वहाँ से लौट पड़े। इसी दौरान उन्हें यह ख़बर मिली कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का के लिए रवाना हो चुके हैं। इसलिए ये लोग भी उसी दिशा में मुड़ पड़े और रास्ते में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आ मिले।

जब ये हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुँचे, तो लिखा है कि उन्होंने जो क़त्ल किया था, उसका पूरा विवरण आपको सुनाया। और तारीख़ की किताब में लिखा है कि उसी समय यह आयत नाज़िल हुई।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا ضَرَبۡتُمۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوۡا وَلَا تَقُوۡلُوۡا لِمَنۡ اَلۡقٰٓى اِلَيۡكُمُ السَّلٰمَ لَسۡتَ مُؤۡمِنًا ۚ تَبۡتَغُوۡنَ عَرَضَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۖ فَعِنۡدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيۡرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنۡتُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيۡكُمۡ فَتَبَيَّنُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرًا

(النساء:95)

ऐ ईमान लाने वालों! जब तुम अल्लाह की राह में सफर पर निकलो तो अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो, और जो तुमसे सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मोमिन नहीं है। तुम तो सांसारिक जीवन की दौलत की लालसा रखते हो, जबकि अल्लाह के पास बहुत-से ग़नीमत के ख़ज़ाने हैं। पहले तुम भी तो ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर अपना अनुग्रह किया। अतः अच्छी तरह जांच-पड़ताल कर लिया करो। निश्चय ही अल्लाह उस सब से भली-भांति अवगत है जो तुम करते हो।

अर्थात्, यह स्पष्ट रूप से निषेध किया गया है कि जो व्यक्ति सलाम करे, उससे कोई कठोरता न की जाए, न ही उसे किसी प्रकार की तकलीफ़ दी जाए, न उसे क़त्ल किया जाए और न ही दंडित किया जाए।

यह ग़ज़वा, जैसा कि उल्लेख हुआ, आठ हिजरी में हुआ, जबकि यह आयत सूरह-ए-निसा की है। यह रिवायत सीरत इब्ने कसीर में लिखी गई है, और सूरह-ए-निसा के संबंध में अधिकांश मत यही है कि यह तीसरे से पाँचवें हिजरी वर्ष के बीच नाज़िल हुई थी।

(स्रोत: "फरहंग-ए-सीरत", पृष्ठ 45, ज़व्वार अकादमी

(स्रोत: "सीरत इनसाइक्लोपीडिया", खंड 9, पृष्ठ 111, दारुस्सलाम)

(स्रोत: "सीरत इब्न कसीर", खंड 3, पृष्ठ 423)

(स्रोत: "तरजुमा-ए-क़ुरआन करीम", हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमतुल्लाह अलैह, पृष्ठ 123)

यह संभव है कि जब यह घटना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मालूम हुई हो, तो आपने यह आयत पढ़कर अपनी नापसंदगी का इज़हार फ़रमाया हो। बहरहाल, आपने इसी आयत के हवाले से उन्हें रोका और टोका। अब आगे, इन शा अल्लाह, फत्ह-ए-मक्का का उल्लेख आरंभ होने की आशा है।

अब मैं जमाअत के एक बुज़ुर्ग और जाँचे-परखे विद्वान, ख़िलाफ़त के फ़िदाई, और इस्लाम के अनुपम सेवक का उल्लेख करूँगा, जिनका हाल ही में देहांत हुआ है। इसी प्रकार, एक और फ़िदाई, सच्चे और वफ़ादार अहमदी का, जो इन दिनों बंदी थे और वहीं उनका निधन हुआ। और जो प्रमाण मिलते हैं, उनसे प्रतीत होता है कि उस दृष्टि से उन्हें शहादत का दर्जा प्राप्त है।

पहला उल्लेख है। श्रीमान सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब का, जो हज़रत सय्यद मीर मोहम्मद इसहाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पुत्र थे। यह कुछ दिन पूर्व छियानवे वर्ष की आयु में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलाईहि राजिऊन।

आप हज़रत अम्मां जान हज़रत नसरत जहां बेगम रज़ियल्लाहु अन्हा के भतीजे थे, और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु तथा हज़रत मरियम सिद्दीक़ा साहिबा के दामाद थे। जैसा कि पहले बताया गया, आप हज़रत मीर मोहम्मद इसहाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे और आपकी माता का नाम सालिहा बेगम था। आप हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पौत्र थे। आपकी माता हज़रत पीर मंज़ूर मोहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री थीं, जो हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब लुधियानवी के सुपुत्र थे।

सय्यद महमूद अहमद साहिब ने प्रारंभिक शिक्षा क़ादियान से प्राप्त की, फिर पंजाब यूनिवर्सिटी से बी.ए. किया। मार्च 1944 में, अपने पिता हज़रत सय्यद मीर मोहम्मद इसहाक़ साहिब की वफ़ात के दिन आपने अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी।

उनके बेटे अज़ीज़म मोहम्मद अहमद ने मुझे लिखा कि 17 मार्च को वे इस दिन को बहुत अहमियत का दिन कहा करते थे। उन्होंने अपने अब्बा से पूछा कि आपके लिए यह दिन महत्वपूर्ण क्यों है? तो उन्होंने कहा, "इस दिन मेरे वालिद की वफ़ात हुई थी और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूरा दिन हमारे घर में बिताया था। यहाँ तक कि नमाज़ें भी वहीं पढ़ाईं। और एक छोटी सी तक़रीर की जिसमें मीर साहिब की असीमित सेवाओं, उनके वक्फ़ के जज़्बे और इल्मी सलाहियत का उल्लेख किया। उस वक्त मैं खड़ा हुआ और वहीं हज़रत खलीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, 'हज़ूर! मैं अपनी ज़िन्दगी वक्फ़ करता हूँ।'"

इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अत्यंत भावुक हो गए। आपने इस वक्फ़ को अत्यधिक सराहा। उस समय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब की उम्र चौदह वर्ष थी। और फिर उन्होंने इस वादे को ऐसे निभाया कि वैसी मिसालें विरले ही मिलती हैं।

आपकी जमाअती सेवाएं इस प्रकार हैं। सन् 1954 से 1957 तक आप इंग्लैंड में रहे, जहाँ आपने एक मुबल्लिग़ के रूप में कार्य किया। इसी अवधि के दौरान आपने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के निर्देश पर SOAS (स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़) से शिक्षा भी प्राप्त की। हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के साथ आप एक ही समय में पढ़ते थे। कुछ समय लंदन मिशन में सचिव के रूप में भी आपने सेवा दी। 1957 से 1959 तक वक़ालत-ए-दिवान में बतौर रिज़र्व मुबल्लिग़ कार्यरत रहे। फिर 1960 में जामिआ में शिक्षक नियुक्त किए गए।

यह सेवाएं 1978 तक जारी रहीं। 1978 से 1982 तक आप अमेरिका में मुबल्लिग़ रहे। 1982 से 1986 तक स्पेन में सेवा का अवसर मिला। 1986 से 1989 तक वक़ील-उत-तस्नीफ़ के रूप में कार्य किया। 1986 से 2010 तक आप जामिआ अहमदिया रब्वा के प्रिंसिपल के रूप में सेवा पर नियुक्त रहे। इसी अवधि में, सन् 1994 से जुलाई 2001 तक आप वक़ील-उत-तालीम भी रहे। इसी तरह आप रिसर्च सैल के इंचार्ज थे, वाक़ेआ-ए-सलीब सैल के भी प्रमुख थे। सन् 2005 में जब नूर फ़ाउंडेशन की स्थापना हुई, तो आप इसके अध्यक्ष नियुक्त हुए और अंतिम समय तक इस सेवा में रत रहे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने 3 जून 1962 को आपको मजलिस इफ्ता का सदस्य नियुक्त किया और नवंबर 1972 तक आप इस समिति के सदस्य रहे। इसके बाद दिसंबर 1989 में, हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने आपको पुनः इफ्ता समिति का सदस्य नियुक्त किया, और आप जीवनपर्यंत इस दायित्व पर कायम रहे।

ख़ुद्दामुल-अहमदिया में भी आपने विभिन्न हैसियतों में। मोहतमिम और नायब सदर के रूप में। सेवा की। शैक्षिक क्षेत्र में भी आपकी सेवाएं अत्यंत व्यापक थीं। हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह द्वारा किए गए क़ुरआन करीम के अनुवाद में भी आपने भरपूर सहयोग किया, जिसका स्वयं हज़रत खलीफ़ा राबे रहमहुल्लाह ने उल्लेख कर आभार प्रकट किया। आपने रब्वा के जिन सहायकों का नाम लिया। सूफ़ी बशारतुर्रहमान साहिब, मौलाना अबुल मुनीर नूरुल हक़ साहिब, सैयद अब्दुल हई साहिब, मौलाना दोस्त मोहम्मद साहिब, जमीलुर्रहमान रफ़ीक़ साहिब। उनमें सैयद मीर महमूद अहमद साहिब को भी गिना और कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से ये लोग निरंतर मेरे साथ जुड़े रहे।

(स्रोत: "तरजुमा-ए-क़ुरआन करीम", हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह, "इज़हार-ए-तशक्कुर")

सिहाह सित्ताह (हदीस की छह प्रमुख पुस्तकों) का आपने पूर्ण उर्दू अनुवाद किया, और इसके बाद मुस्नद अहमद बिन हंबल का अनुवाद प्रगति में था। इसी प्रकार, आपने सहीह मुस्लिम की व्याख्या आरंभ की थी। आपने शमाइल-ए-तिर्मिज़ी का भी अनुवाद किया। बाइबिल के संबंध में आपने दर्जनों शोध-लेख लिखे जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आपने बाइबिल की किताब "इस्तिसना" और तीन इंजीलों की व्याख्या भी की। इसी तरह कफ़न-ए-मसीह, मरहम-ए-ईसा, तथा हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की हिजरत के विषय में बहुत उच्च कोटि का शोधकार्य प्रस्तुत किया।

वर्तमान में आपके प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रंथों एवं सामग्री में शामिल हैं: सीरत-उन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, काना खुलुक़ुहु अल-क़ुरआन (तीन भागों में), हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्यारी बातें, एक लघु पुस्तिका 365 दिन, जो नमाज़ के बाद दैनिक पाठ के लिए चयनित अंश हैं। फिर एक पुस्तक फिलस्तीन से कश्मीर तक। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लेखनी के आधार पर सीरत-उन-नबी की सामग्री भी आपने संकलित की, जो अब तक अप्रकाशित है। आपने सहीह बुख़ारी से चुनिंदा विषयों पर भी संकलन किया। जो विशेष रूप से तरबियत संबंधी हैं। जब एक बार पूर्व पोप ने एक आपत्तिजनक प्रश्न उठाया था, तब आपने उसका भी विश्लेषण कर माकूल उत्तर दिया।

मस्जिद बशारत स्पेन की आधारशिला के समय जिस मूल पत्थर पर हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ कराई थी, वह पत्थर हज़रत मीर साहिब ने स्वयं उठाया हुआ था। इसी प्रकार मस्जिद बशारत स्पेन के उद्घाटन के अवसर पर भी उन्हें और उनकी पत्नी को सेवा का अवसर मिला, जिसका हज़रत खलीफ़ा राबे रहमहुल्लाह ने उल्लेख किया।

(स्रोत: "ख़ुतबात-ए-ताहिर", खंड 1, पृष्ठ 139, बयान फ़रमाया गया: 10 सितंबर 1982)

सन् 1955 के जल्सा सालाना के उद्घाटन अवसर पर हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाहों की घोषणा की थी। यह आठ निकाह थे। इनमें मीर महमूद अहमद साहिब का निकाह भी था, जिसे हज़रत खलीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी बेटी अम्मतुल मतीन साहिबा के साथ पढ़ाया था। आपने फ़रमाया कि आमतौर पर निकाह 29 दिसंबर को हुआ करते हैं, लेकिन इनमें कुछ विशेष मामले हैं। एक यह कि यह निकाह मेरी अपनी बेटी अम्मतुल मतीन का है, जो सय्यद मीर महमूद अहमद, पुत्र मीर मोहम्मद इसहाक़ साहिब से तय पाया गया है। फिर आपने इस पर विस्तार से प्रकाश डाला।

फिर आपने कहा कि महमूद अहमद इस समय लंदन में बी.ए. की पढ़ाई कर रहे हैं और यदि अल्लाह ने सलामती रखी तो अगली मई में वापसी का इरादा है। आपने फ़रमाया कि मैंने अपने तीनों बच्चों। महमूद अहमद (दामाद), दाऊद अहमद (दामाद) और ताहिर अहमद (अम्मा ताहिर मरहूमा का पुत्र — हज़रत खलीफ़ा राबे रहमहुल्लाह) — को वहाँ छोड़ दिया है ताकि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें और भविष्य में जमाअत की सेवा कर सकें। उन्हें विशेष रूप से यह ताकीद की गई थी कि वे अंग्रेज़ी में प्रवीणता प्राप्त करें। आपने फ़रमाया कि यदि अंग्रेज़ी शिक्षा में दक्षता प्राप्त हो जाए, तो क्योंकि ये तीनों पहले ही मौलवी फ़ाज़िल हैं और इनकी अरबी शिक्षा भी बहुत उच्च कोटि की है, तो वे क़ुरआन शरीफ़ और हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अंग्रेज़ी अनुवाद करके जमाअत की प्रचार और प्रसार में सहायक हो सकते हैं। फिर आपने फ़रमाया कि रिव्यू ऑफ रिलिजन्स को भी एक अच्छे और योग्य संपादक की आवश्यकता है। और इसी उद्देश्य से मैंने अपने इन बच्चों को वहाँ छोड़ा है।

यद्यपि इस बीमारी और कमजोरी की हालत में इतने ख़र्चों का वहन करना। तीन बेटे, दो दामाद और एक बेटा वहाँ पढ़े। कठिन कार्य था, लेकिन मैंने समझा कि जमाअत की कठिनाई मेरी व्यक्तिगत कठिनाई से कहीं बढ़कर है।

(स्रोत: "ख़ुतबात-ए-महमूद", खंड 3, पृष्ठ 672–674, बयान दिनांक 26 दिसंबर 1955)

हज़रत मुस्लेह मऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को सदा यह ध्यान रहता था कि जमाअत के लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी देना अनिवार्य है। आपने इस हेतु हर प्रकार की क़ुर्बानियाँ दीं। अपने माल, अपने समय और अपने बच्चों तक को अल्लाह की राह में क़ुर्बान किया।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की संतान में से सबसे बड़े बेटे के निकाह की रस्म 1982 में हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने अदा की। इस अवसर पर आपने हज़रत मीर मोहम्मद इस्हाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद का उल्लेख किया और उनके ज़िक्र के दौरान सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब का नाम भी लिया। आपने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने हज़रत मीर मोहम्मद इस्हाक़ साहिब रज़ि. की दुआओं को सुना और उनके अल्लाह के साथ मुहब्बत को देखकर उनके तीनों बेटों को वक़्फ़ की तौफ़ीक़ दी। तीनों की स्वभाविक प्रवृत्तियाँ भिन्न थीं, जैसा कि हर इंसान की होती है, लेकिन हज़रत खलीफ़ा सालेस रह. फ़रमाते हैं कि जहाँ तक मैंने देखा। तीनों में एक बात समान रूप से पाई जाती थी: यह कि जो कुछ अल्लाह दे, जितना दे, उस पर सिर्फ़ राज़ी न रहो, बल्कि ख़ुशी से राज़ी रहो।

फ़रमाया कि सय्यद मीर दाऊद अहमद साहिब का अपना अलग अंदाज़ था, लेकिन यह गुण उनमें भी था। मीर मसऊद अहमद, जो डेनमार्क में लंबे समय से तबलीग़ में लगे हैं, उनका भी अपना अलग रंग है, मगर वह गुण उनमें भी पाया जाता है। और उनके छोटे भाई मीर महमूद अहमद, जिनके बेटे के निकाह की घोषणा मैं कर रहा हूँ, वह भी अपने अलग अंदाज़ के वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी हैं, लेकिन यह बात तीनों में समान है। कि जो भी जमाअत दे, उसे ख़ुशी से स्वीकार करें और किसी प्रकार की माँग न करें।

आपने फ़रमाया कि उनके पिता की यह विरासत पूरी नस्ल में आगे बढ़ी है। अल्लाह तआला ने हज़रत मामूं जान रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद, अर्थात् मीर इस्हाक़ साहिब की संतानों पर बहुत फ़ज़्ल किया है। इस तरह जमाअत के लिए यह एक आदर्श भी बना और जमाअत ने ऐसे चेहरे देखे जो हर हालत में मुस्कुराते हुए, प्रसन्नचित्त रहते हुए, हर समय अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार बंदे बनकर उसकी हम्द गाते हुए ज़िंदगी के दिन बिताने वाले थे।

(स्रोत: ख़ुत्बा-ए-निकाह, 10 मई 1982, "ख़ुत्बात-ए-नासिर", खंड 10, पृष्ठ 728-729)

इसके बाद आपने दुआ दी कि उनकी अगली नस्लें भी इन गुणों की वारिस बनें।

आपको कविता और शायरी से भी गहरा लगाव था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अशआर और कलामे-महमूद के शेर तो याद थे ही, इसके अतिरिक्त आप स्वयं भी नज़्में कहा करते थे।

एक बार आपने उन मुबल्लिग़ों को, जो जामिआ में आना चाहते हैं और मुबल्लिग़ बनने की इच्छा रखते हैं, लेकिन अभी आए नहीं। एक नसीहत दी और आचार-संहिता बताई। यह एक उत्कृष्ट मार्गदर्शन है, जिसे न केवल मुबल्लिग़ बनने की इच्छा रखने वालों को बल्कि हर उस व्यक्ति को अपनाना चाहिए जो जामिआ में प्रवेश करना चाहता है या कर चुका है।

आपने लिखा। रोज़ाना सुबह तीन बजे उठकर वुज़ू करके, यानी तहज्जुद का समय पाकिस्तान के अनुसार यही बनता है, तहज्जुद की नमाज़ अदा करें।

पांचों वक्त की नमाज़ जमाअत से मस्जिद में अदा करें, और जो लोग रब्वा में रहते हैं, वे कम से कम एक नमाज़ मस्जिद मुबारक में जरूर पढ़ें।

रोज़ाना अल्लाह की रज़ा, रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुहब्बत और ख़िलाफ़त की मुहब्बत

के लिए दुआ करें।

तस्बीह, दरूद शरीफ़, इस्तिग़फ़ार को अपनी आदत में शामिल करें।

हज़रत ख़लीफ़ा या हज़ूर की सेवा में मुहब्बत और अकीदत के साथ दुआ की दरख्वास्त करते हुए ख़त लिखा करें। अपनी मौजूदा जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को पूरी लगन और जिम्मेदारी से निभाएं। अपने माता-पिता की सेवा करें और अगर वे दूर हों तो उन्हें दुआओं में याद रखें। क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद, शब्दशः और अर्थ सहित, सीखने की कोशिश करें।

रूहानी ख़ज़ाइन का कम से कम तीन बार अध्ययन करें।

अल-फ़ज़्ल और एक सामान्य अख़बार प्रतिदिन पढ़ें।

प्रतिदिन ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ का कोई एक कार्य अवश्य करें।

उनके बेटे सैयद ग़ुलाम अहमद फ़र्रुख़ उनके बारे में लिखते हैं।

कुछ बातें मैं प्रस्तुत करता हूँ। अब्बा को अल्लाह तआला से जो प्रेम था, वह उनकी नमाज़ों और ज़िक्रे-इलाही से प्रकट होता था। उनकी नमाज़ों को मैंने स्वयं भी देखा है। मस्जिद में, एक कोने में खड़े होकर जिस ख़ुशू व ख़ुज़ू से वह नमाज़ पढ़ते थे। जो नमाज़ें घर में अदा होती थीं, वह तो हमें मालूम नहीं, लेकिन मस्जिद में भी उनकी नमाज़ों के समय एक विशेष आध्यात्मिक स्थिति होती थी।

उनका अल्लाह से ऐसा स्वाभाविक और आत्मिक संबंध था जिसका बाहरी प्रदर्शन नहीं करते थे, लेकिन फिर भी कभी-कभी यह प्रकट हो जाता था और लोग स्वयं अनुभव कर लेते थे।

उदाहरण के लिए उन्होंने लिखा कि मैं अब्बा की नोटबुक देखता था, उस पर हर दिन “अल्लाह” लिखा हुआ नज़र आता। ध्यान देने पर मालूम हुआ कि जब भी वे अपने क़लम में सियाही भरते, तो सबसे पहले “अल्लाह” शब्द लिखते। इसी तरह, कुछ डायरी के पन्नों पर कई-कई पंक्तियों में केवल “अल्लाह” ही लिखा हुआ होता।

आपने अंतिम वर्षों में अपने कमरे में एक वाक्य लिखा था। “ऐ मेरे अल्लाह, ति आ मो।”

मैंने पूछा, “इसका क्या मतलब है?” कहते हैं। “यह इटालियन भाषा का वाक्य है ति आ मो अर्थात् I
love you।” उन्होंने यह अल्फ़ाज़ अल्लाह तआला के लिए लिखे थे।

उनकी एक हम्द (अल्लाह की स्तुति में रचना) भी है, जिसका एक शेर है: "मुझ को हासिल रहे, मुझ को दायम मिले। तेरा दीदार भी, तेरी गुफ़्तार भी।" बीमारी के दिनों में, जब एक बार उनकी अपेंडिक्स की शल्यक्रिया हुई, तो उन्होंने “अस्सलामु अलैकुम” की आवाज़ सुनी और फिर स्वस्थ हो गए। उनकी इबादत और नमाज़ों की गहराई का संबंध भी उनके अल्लाह से जुड़ाव (तअल्लुक़ बिल्लाह) से था — इन दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। कई बार उन्होंने नमाज़-ए-तहज्जुद में दुआ का तरीका बताया कि पहले अल्लाह की हम्द करते हैं और फिर तअल्लुक़ बिल्लाह के लिए दुआएँ करते हैं। एक दिन उन्होंने बताया कि वह हर दिन तहज्जुद में अपने चाचा जान। हज़रत डॉक्टर सैयद मीर मोहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु। की एक नज़्म के अशआर पढ़ा करते हैं जो उन्होंने “तुम” के शीर्षक से लिखी थी। उसका पहला शेर यह है:

"इलाज-ए-दर्द-ए-दिल तुम हो, हमारे दिलरुबा तुम हो, तुम्हारा मुद्दआ हम हैं, हमारा मुद्दआ तुम हो।"

उनके बेटे कहते हैं कि उन्होंने तहज्जुद की नमाज़ में दुआ का जो क्रम बताया, वह कुछ इस प्रकार था: पहले अल्लाह की हम्द, फिर दुरूद शरीफ़, फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उनकी औलाद और खुलफ़ा के लिए अलग-अलग दुआएँ। फिर अपने दादा हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु से शुरू करके, वंशानुक्रम के अनुसार नीचे की पीढ़ियों के लिए दुआ करते जाते थे। अपनी औलाद में पहले अपनी बेटी, फिर बेटों के लिए दुआ करते थे।

हक़ूक़ुल इबाद की अदायगी का असली ज़रिया भी वे दुआ को ही मानते थे। ख़िलाफ़त से उनकी मुहब्बत तो झलकती ही थी, लेकिन इससे भी बढ़कर उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम और इश्क़ था। सुन्नते-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर चलने की कोशिश करते थे, और छोटी-छोटी बातों से भी इसका इज़हार होता था।

उनके बेटे कहते हैं कि एक दो बार ऐसा हुआ कि वह किसी असुविधाजनक कुर्सी पर बैठे हुए थे और मैं एक आरामदेह कुर्सी पर बैठा था। मैं उठकर उनके लिए कुर्सी खाली करना चाहता था, लेकिन उन्होंने उस पर बैठने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी को उसकी जगह से उठाकर स्वयं बैठने से मना फ़रमाया है। “तुम मेरे बेटे हो, लेकिन यह रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत के खिलाफ़ है कि किसी और की जगह पर बैठा जाए। इसलिए मैं नहीं बैठूंगा।”

इसी तरह रास्ते में मिलते समय सलाम में हमेशा पहल करने की कोशिश करते थे। शुक्रवार को जुमे की नमाज़ और फिर अस्र की नमाज़ के बाद दुआओं में विशेष रूप से लगे रहते थे और यह नापसंद करते थे कि इस समय कोई मिलने भी आए, क्योंकि यह क़ुबूलियत की घड़ी मानी जाती है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है। बच्चे भी इस समय उनके पास जाने से परहेज़ करते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के यौमे-विलादत और यौमे-वफ़ात, तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के यौमों पर, वे ज़ोर देकर दुरूद शरीफ़ की बहुतायत से पढ़ने की हिदायत देते थे और स्वयं भी अक्सर पढ़ते रहते थे:

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिं व आलि मुहम्मद।"

उनके बेटे कहते हैं कि एक बार मैं क़ादियान गया, तो उन्होंने मुझे लिखकर यह दुआ दी कि “दारुल-मसीह के हर कमरे में मेरी तरफ़ से यह दुआ ज़रूर पढ़ना, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार मुबारक पर भी दुआ करना।”

1990 में आप पर एक मुक़दमा दर्ज किया गया जो मजलिसे-शूरा में आपके इज़्हारे-ख़यालात से संबंधित था। यह 298-C का केस था, लेकिन जज ने आपसे कहा कि आपने अपने भाषण में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की तौहीन की है। इस पर आपने सख़्ती से विरोध किया और कहा: “यह मुझ पर इल्ज़ाम है, यह सरासर झूठ है, झूठ है, झूठ है! मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा की दिल से ताज़ीम करता हूँ, और उनकी रिसालत पर पक्का ईमान रखता हूँ। मैं सैय्यद हूँ, उनकी औलाद से हूँ और जो झूठ बोले उस पर अल्लाह की लानत भेजता हूँ।” जज के सामने आपने बहुत हिम्मत और जुर्रत से यह बयान दिया।

आख़िरी बीमारी के दिनों में भी वे दुआओं में और ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ते थे और बार-बार कहते थे: “मैं मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम हूँ।”

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उनका प्रेम भी अपनी मिसाल आप था। उनके बेटे कहते हैं कि 1989 में जब दैनिक अल-फ़ज़्ल रब्वा ने जमाअत की सौंवीं सालगिरह पर बुज़ुर्गों के इंटरव्यू किए, तो आपने केवल इतना ही कहा कि “हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सबसे बड़ा मोजिज़ा यह है कि उन्होंने इंसान का फिर से ज़िंदा अल्लाह से संबंध जोड़ दिया।” यही उनकी बातों की ख़ासियत थी।

बीमारी के दिनों में कई बार क़ादियान की यात्रा की योजना बनती, लेकिन तबीयत या अन्य कारणों से जाना संभव नहीं हो पाता और कार्यक्रम रद्द हो जाते, लेकिन एक गहरी मुहब्बत थी क़ादियान से, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार की ज़ियारत की एक तड़प थी, जिसके चलते वे आख़िरी वक़्तों में तकलीफ़ उठाकर भी वहाँ चले जाया करते थे।

पढ़ाई के बारे में लिखा गया है कि क़ुरआन करीम, सहीह बुख़ारी, रूहानी ख़ज़ाइन का अध्ययन उनके जीवन का दैनिक हिस्सा था, और हमें भी इसका आदेश देते थे। जो भी मिलने आता, उन्हें भी पढ़ने की तालीम देते। 1990 में उन पर मुक़दमा चला, एक रात चिनियोट के हवालात में गुज़ारी। कहते हैं, मैं मिलने गया तो उन्होंने कहा: “मेरे लिए एक बाल्टी, एक मग और ब्राहीने-अहमदिया ले आओ।”

मियाँ ख़ुरशीद अहमद साहिब साथ थे, उन्होंने कहा: “इतनी तंग जगह में, इतनी गर्मी में, इतनी मुश्किल किताब आप कैसे पढ़ेंगे?” उन्होंने फ़रमाया: “कोई बात नहीं, मेरे लिए मुश्किल नहीं है। मैंने इसे पहले ही पांच बार पढ़ा है।” चूँकि तबीयत साफ़-सुथरी थी, यह तंगी उनके लिए बेहद तकलीफ़देह थी, लेकिन इस हालत में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब पढ़ने की फ़िक्र थी।

आपको धार्मिक ज्ञान में। इस्लाम के साथ-साथ यहूदियत, ईसाईयत आदि में भी गहरी पैठ थी। मज़ाहिब के तुलनात्मक अध्ययन में आप निपुण थे। परंपरागत फ़िक़्ह से आप असंतुष्ट रहते थे और सदा यह नसीहत करते थे कि मार्गदर्शन केवल क़ुरआन करीम, सुननते-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, सहीह हदीस, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा उनके खुलफ़ा के इल्मे-कलाम से ही लेना चाहिए।

दुनियावी ज्ञान में भी आपकी गहरी रुचि थी। विशेषकर विज्ञान, इतिहास, और हाइकिंग आदि पर। आप अंग्रेज़ी और उर्दू शायरी, दोनों से जुड़े हुए थे। कई शायरों के शेर याद थे। अपने आईपैड पर शायरों का कलाम सुनते रहते थे।

भाषाओं में विशेष रुचि थी। उर्दू, अरबी, अंग्रेज़ी के अलावा स्पैनिश, इटालियन और हिब्रू (इबरानी) में भी महारत हासिल कर ली थी। इटालियन में टीवी और आईपैड पर कार्यक्रम नियमित रूप से देखा करते थे, क्योंकि एक समय हज़रत मुस्लेह मौऊद

रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे इटालियन भाषा सीखने के लिए कहा था और कहा था कि "हज़ूर उन्हें इटली भेजेंगे।" वे कहा करते थे कि "हज़ूर ने कहा था सीखो। तो मैं सीख रहा हूँ, क्योंकि यह हुक्म अब तक रद्द नहीं किया गया और आज तक मेरे लिए जारी है, इसलिए मैं सीखता रहूँगा।"

माली क़ुर्बानी बड़े जोश से करते थे, और जो कुछ भी उन्हें विरासत में मिला, उसका हिस्सा फ़ौरन अदा कर दिया।

मुबश्शिर अयाज़ साहिब, जो वर्तमान में जामिआ के प्रिंसिपल हैं, लिखते हैं कि "मीर साहिब ने एक बेहद पाक, मासूम और सच्ची ज़िंदगी बिताई। वह अत्यंत नफ़ीस लेकिन अत्यंत आजिज़ और विनम्र थे। क़नाअत और तवक्कुल की एक शानदार मिसाल थे। ज्ञान और आध्यात्मिकता का सागर थे। बहुत बड़े आलिम थे। मुफ़स्सिर भी थे, मुहद्दिस भी थे। जमाअत अहमदिया की इतिहास में वह पहले खुशनसीब आलिम हैं, जिन्हें क़ुरआन करीम का अनुवाद करने के साथ-साथ पूरी सिहाह सित्ताह का उर्दू अनुवाद करने की तौफ़ीक़ मिली।

मीर साहिब की ज़िंदगी का नारा था: काम, काम, और बस काम। 'छुट्टी' जैसा कोई शब्द मीर साहिब की डिक्शनरी में नहीं था। वे निःसंदेह एक 'ख़िलाफ़तनुमा' शख़्सियत थे, जिन्होंने ख़िलाफ़त की आज्ञा का पालन और उससे प्रेम करके हमें अमलन दिखाया कि ख़िलाफ़त का सम्मान किसे कहते हैं।

वे साइकिल पर समय से पहुँचा करते थे। सात बीस पर जामिआ शुरू होता था, और वह सात बीस पर पहुँच जाया करते थे। दो-तीन बार साइकिल से गिरे भी। एक बार बीमार थे, तबियत नाज़ुक थी, मैंने कहा: "आप दस बजे तक जाया करें।" उन्होंने इसे हुक्म समझा और उसके बाद दस बजे ही दफ़्तर जाने लगे। एक दिन मुबश्शिर साहिब ने लिखा कि मैं देखा कि वे दस बजे से पहले बरामदे में टहल रहे थे, मैंने पूछा: "आप अंदर क्यों नहीं आते?" तो उन्होंने फ़रमाया: "अभी दस नहीं बजे। मुझे ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का हुक्म है कि मैं दस बजे दफ़्तर जाऊँ, इसलिए मैं दस बजे ही जाऊँगा।

उनकी आज्ञापालन की मिसाल बेमिसाल थी।

वह एक जीवित आदर्श थे। अफसरों के लिए भी और मातहतों के लिए भी।

तंवीर नासिर साहिब, जो क़ादियान में मौलवी हैं, लिखते हैं: "मेरे दिल में उनकी जो याद हमेशा रहेगी, वह यह है कि एक दिन मैं क़ादियान की मस्जिद मुबारक में बैठा था, तो मीर साहिब पहली सफ में टहल रहे थे। उनका इस तरह टहलना और होंठों ही होंठों में दुआएँ करना मुझे बहुत प्यारा लगा और मैं बहुत आनंदित हो रहा था। कुछ देर बाद मुझे साहस हुआ और मैंने आगे बढ़कर अर्ज़ किया: 'आप मस्जिद की पहली सफ में टहल रहे हैं, इसकी वजह क्या है?' उन्होंने फ़रमाया: 'मैंने हज़रत मुस्लेह मऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को इस स्थान पर टहलते देखा है, और मैं भी उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर चल रहा हूँ।' हज़रत मुस्लेह मऊद से उन्हें अजीबो-ग़रीब मुहब्बत थी।"

फिरोज़ आलम साहिब लिखते हैं: "मेरे जामिआ के दूसरे या तीसरे साल में वह प्रिंसिपल बनकर आए। यह हमारी ख़ुशक़िस्मती थी कि उन्होंने हमें तालीम से कहीं अधिक अपनी आदर्श शख़्सियत से, अपने इल्म पर अमल की मिसाल से तरबियत दी। मैं उनकी जितनी हो सके दर्स सुना करता था और उस पर अमल की कोशिश करता था। उन्होंने हमें 'मुवाज़नाए मज़ाहिब' पढ़ाया। अक्सर हमें वे दलीलें लिखवाते और समझाते जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताबों में पेश की हैं।"

"मुझे याद है, एक बार वे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मोजज़ों के बारे में पढ़ा रहे थे। अचानक सवालिया लहजे में पूछा: 'क्या आज भी मोजज़े होते हैं?' फिर अपना एक तजुर्बा सुनाया। 'एक बार जलसे के दौरान मेरी ड्यूटी थी, खाना बहुत कम था, अचानक बहुत सारे मेहमान आ गए। जो मामूली सा खाना था, उसे बाँटना शुरू किया। अल्लाह ने बरकत डाली। सब ने खाया और किसी को कोई कमी महसूस न हुई।'"

उनके पोते अज़ीज़म हाशिर अहमद, जो अब एक मुबल्लिग़ हैं, लिखते हैं: "अल्लाह से उन्हें बहुत मोहब्बत थी। अल्लाह की मुहब्बत का ऐसा असर था जो बड़े-बूढ़ों से लेकर बच्चों तक सब पर था। वे तहज्जुद के पाबंद थे, नमाज़ों के पाबंद थे। मुझे याद है, जब मैं छोटा था, कुछ समय उनके घर रहा। वे तहज्जुद के बाद मुझे फज्र की नमाज़ के लिए उठाते, फिर लंबी तिलावत करते। गहराई और मोहब्बत से क़ुरआन पढ़ते। इस सब का मेरे दिल पर गहरा असर हुआ।"

"जब मैं कनाडा जामिआ में दाख़िल हुआ और वहाँ जाता था, तो वे पूछा करते। 'क़ुरआन का तर्जुमा और तफसीर अलग-अलग पढ़ाई जाती है या एक साथ?' मैंने कहा: 'अलग-अलग।' तो वे बहुत ख़ुश हुए। कहा: 'ऐसा ही होना चाहिए। कई लोगों को तफसीर तो आती है, लेकिन तर्जुमा नहीं।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मोहब्बत का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा: "वे रूहानी ख़ज़ायन के दीवाने थे। उन्होंने मुझसे कई बार कहा: 'मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें कई बार पढ़ी हैं, लेकिन हर बार नए मवाज़े मिलते हैं। अगर तुम रूहानी ख़ज़ायन पढ़ लो, तो तुम्हें क़ुरआन, हदीस, और सीरत की समझ आ जाएगी।'" यह बात मुझे भी उन्होंने एक बार कही थी।

वो कहते थे: "मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तमाम किताबें तीन बार तो ज़रूर पढ़ी हैं, और कुछ को तीन से ज़्यादा बार भी पढ़ा है।" मगर उनके अंदर ऐसी आजिज़ी थी कि उन्होंने कभी अपनी इल्मियत का इज़हार नहीं किया।

एक बार जब घर में बैठकर खुतबा सुन रहे थे, बिजली चली गई। पाकिस्तान में ऐसा अक्सर होता है। टीवी बंद हो गया। मैं बच्चा था, उठकर जाने लगा। उन्होंने मुझे रोका और कहा: "बैठो, दुआएँ पढ़ते रहो। जाने की इजाज़त नहीं है। तुम नहीं जानते किस पल बिजली आ जाए और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का खुतबा फिर से शुरू हो जाए, और तुम चंद लफ़्ज़ मिस कर दो। ये बर्दाश्त नहीं।"

एक बार किसी फ़ंक्शन में मेरा भाषण था, वे सुन नहीं सके। जब MTA लगाया तो भाषण खत्म हो चुका था। किसी ख़ादिम से कहा। उसने iPad पर चलाने की कोशिश की, लेकिन वह किसी और भाषा में आ रहा था। फिर भी वे सुनते रहे। जब मैं गया और उन्हें उर्दू में भाषण लगा कर दिया, तो बहुत ख़ुश हुए। बोले: "तुमने मेरे लिए बहुत बड़ा काम किया है, बहुत मदद की है, मुझ पर एहसान किया है।"

बच्चों से भी शुक्रगुज़ारी के साथ पेश आते थे।

आमिर सफीर साहिब, एडिटर Review of Religions, लिखते हैं: "मैंने उनमें ख़िलाफ़त की इताअत का बेहद अजीब और बेनज़ीर नमूना देखा। एक बार मैंने ख़ुद कहा कि आप उलमा से कहिए कि 'रिव्यू' के लिए लेख भेजें। कुछ नाम मैंने बताए जिनमें मीर महमूद अहमद साहिब भी थे। वे पाकिस्तान में थे। रात के 10–11 बजे का समय था, मैंने उनसे संपर्क किया। उनकी पत्नी ने फोन उठाया, कहा: 'वे सो रहे हैं।' मगर मीर साहिब ने बातों की आवाज़ सुनकर फोन ले लिया। मैंने कहा: 'ख़लीफ़ा-ए-वक़्त ने आपसे इस विषय पर लेख लिखने को कहा है।' उन्होंने कहा: 'अभी तो समझ नहीं आ रहा, सुबह बताऊँगा।' लेकिन अगले ही दिन 15 पन्नों का एक लेख भेज दिया और साथ लिखा: 'रात को एक लड़के का फोन आया था, उसने कहा कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त ने लेख लिखने को कहा है। तो मैंने यह लिखा है।' आगे कहा: 'यह पहली क़िस्त है, अगली क़िस्तें भेजता रहूँगा।'

जब कफ़न-ए-मसीह पर उनका कार्यक्रम होता था और जलसों में जो नुमाइश लगती थी, उसमें हर साल वे शरीक होते और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम की रौशनी में उस विषय को बयान करते।

आमिर सफीर लिखते हैं कि मौलवी जब किसी विषय का अध्ययन करते हैं, तो अक्सर वह जमाअती पहलुओं को छोड़कर दुनियावी हवाले पर ज़्यादा ध्यान देते हैं। लेकिन मीर साहिब की नीति यह थी कि पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरों और जमाअती दृष्टिकोण को पूरी तरह समझें, फिर उसके बाद ग़ैर-जमाअती या सेक्युलर पहलुओं को देखें। न कि पहले सेक्युलर और फिर जमाअती।

वे बड़े आत्मविश्वास से Shroud of Turin के मशहूर विशेषज्ञों के सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अक़ीदा पेश करते थे। कि मरहम-ए-ईसा ही वह कड़ी है जिससे वाक़िया-ए-सलीब को सही मायनों में समझा जा सकता है

Barrie Schwortz, जो शरॉड के सबसे मशहूर विशेषज्ञ और फ़ोटोग्राफ़र माने जाते हैं, उन्होंने खुद कहा: "अगर आप सचमुच मरहम-ए-ईसा से संबंधित अपना तर्क सिद्ध कर दें, तो मुझे मानना पड़ेगा कि ईसा सलीब से बच गए थे।"

उनके बारे में अनगिनत वाक़ियात दर्ज हैं। बच्चों ने, उनकी औलाद ने, वाक़िफ़ीन और मौलवियों ने लिखा है। हर कोई बता नहीं सकता।

एक बात जो बहुत से लोगों ने साझा की। वह यह कि वे कहते थे: "क़ब्र शब्द को पकड़ लो। इस पर अमल करो।"

इसका मतलब बताते थे: क़ — क़ुरआन, ब — बुख़ारी, र — रूहानी ख़ज़ायन।

कहते थे: "अगर तुम इन तीनों के माहिर बन जाओ, इन्हें पढ़ो, समझो, इन पर अमल करो। तो तुम अपने मक़सद में कामयाब हो जाओगे।"

वैसे भी "क़ब्र" का मतलब अगर इंसान को याद रहे तो अल्लाह तआला की याद भी ज़िंदा रहती है, और जब अल्लाह की याद बनी रहे तो इंसान तक़्वा के रास्ते पर चलता है।

वह ख़िलाफ़त के एक अज़ीम मददगार और सहायक थे।

वह जाँनिसार थे हर हुक्म पर अमल करने वाले थे। वफ़ादार थे। ऐसे 'सुलतान-ए-नसीर' बहुत कम पैदा होते हैं। 'आलिम-बा-अमल' थे।

मुझे तो कम से कम उनकी मिसाल कहीं और नज़र नहीं आती।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 12-19 June 2025 Issue No. 24-25

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

अल्लाह के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं है।

अल्लाह तआला करे कि ऐसे और वफ़ादार, मुख़लिस, और तक़्वा पर चलने वाले ख़िलाफ़त के मददगार पैदा हों,

और अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी उनके वालिद की दुआओं का वारिस बनाए, और उन्हें उनके अमल और नसीहतों पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था, यह एक और अहमदी का ज़िक्र है जिनका हाल ही में कालकोठरी में देहांत हुआ।

डॉक्टर ताहिर महमूद साहिब, गुलाम रसूल साहिब के सुपुत्र, कराची के रहने वाले थे।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन वफ़ात के समय उनकी आयु 70 वर्ष थी।

विवरण के अनुसार, मरहूम ताहिर महमूद साहिब, जो मिलीर कॉलोनी कराची के सर्किल के सदर थे, उनके साथ दो अन्य सदस्य। एजाज़ हुसैन साहिब और अयाज़ हुसैन साहिब। पर मिलीर कॉलोनी कराची की अपनी मस्जिद की तामीर की शैली और वहाँ जुमा की नमाज़ अदा किए जाने को लेकर पुलिस द्वारा अभियोग लगाया गया। पहले उन्हें अग्रिम ज़मानत मिली, लेकिन बाद में वह रद्द कर दी गई और उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। जब वे ज़मानत के लिए अदालत में उपस्थित हुए तो वहाँ विरोधियों की भीड़ और विरोधी वकीलों ने उन पर हमला किया। उन्हें शारीरिक यातना दी गई, जान से मारने की धमकियाँ दी गईं। यहाँ तक कि एक पुलिस अधिकारी ने भीड़ से कहा कि इन्हें गोली मार दो। पुलिस स्टेशन में भी उनके साथ मारपीट की गई। उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा के ख़िलाफ़ अपशब्द कहने पर मजबूर किया गया, लेकिन वे अपने ईमान पर डटे रहे। अदम-तज़लज़ुल का परिचय दिया।

इसके बाद उन्हें जोडिशियल करके जेल भेज दिया गया। वहाँ वे दो महीने तक रहे। वफ़ात से कुछ दिन पहले, गुर्दों में संक्रमण के कारण उनकी तबीयत बिगड़ी, तब उन्हें जेल से अस्पताल ले जाया गया, लेकिन कुछ ही दिनों बाद उनका देहांत हो गया।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

वफ़ात के समय भी अस्पताल में उनके हाथों में हथकड़ियाँ बंधी हुई थीं। यह वफ़ात ज़ुल्म और शारीरिक यातना का परिणाम भी थी। संभव है कि अंदरूनी चोटें भी आई हों, और संभव है कि वही कारण बनी हों। इस लिहाज़ से उन्होंने असारी की कठिनाइयाँ झेलीं, मार खाई, अदालत के सामने मार खाई। यह सभी परिस्थितियाँ और प्रमाण ऐसे हैं कि उन्हें शहादत का दर्जा प्राप्त होता है और वे शहीदों के श्रेणी में गिने जाएँगे।

वे निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल थे और बतौर सदर, सेक्रेटरी दावत-इल्लल्लाह और कई अन्य उप-शाखाओं में सेवाएँ देने का उन्हें अवसर मिला। उनके ताया, हकीम अहमद दीन साहिब के माध्यम से उनके परिवार में अहमदियत आई थी, जिन्होंने हज़रत मौलवी इमाम दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु (जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे) के ज़रिये 1920 के दशक में, खिलाफ़त-ए-सानिया के दौर में बैअत कर अहमदियत को अपनाया था। इसके बाद उनके पिता ने भी अहमदियत स्वीकार की।

वे ग़रीबों की पर्दादारी करते, उनकी आर्थिक सहायता करते थे। कई निर्धन कन्याओं की शादियाँ करवाईं। जेल में भी अपने साथी क़ैदियों की मदद करते रहे। जब जेल में उनसे मुलाक़ात होती और पूछा जाता कि कोई तकलीफ़ तो नहीं? तो कहते: "तकलीफ़ कैसी? मैं तो यहाँ दीन की ख़ातिर आया हूँ, मुझे तो दावत-इल्लल्लाह का अवसर मिल रहा है।" वहाँ भी वे निर्भीक होकर तब्लीग़ करते रहे।

ताहिर महमूद साहिब के ख़िलाफ़ 17 जनवरी 1988 को पुलिस स्टेशन मिलीर कॉलोनी कराची में एक मुक़दमा दर्ज हुआ था। आरोप था कि उन्होंने किसी व्यक्ति के छोटे भाई को बैअत करवाया है। उस समय भी वे गिरफ़्तार हुए थे। यह दूसरी बार था कि उन्हें असारी-ए-राह-ए-मौला बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस बार भी उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा। तीन बार उन पर जानलेवा हमला हुआ, लेकिन उन्होंने अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया। उन्होंने एक ख़्वाब देखा था जिसमें एक हमलावर को अल्लाह की गिरफ़्त में देखा। बाद में वह शख़्स किसी और झगड़े में क़त्ल कर दिया गया। जो बाकी दो थे, वे मरहूम के घर आए और अपने अपराध के लिए माफ़ी माँगी। उन्होंने तुरंत माफ़ कर दिया, कोई केस नहीं किया।

मरहूम की पत्नी बयान करती हैं: "उनका व्यवहार हमारे साथ आदर्शपूर्ण था। वे जमाअत के लिए वक़्फ़ थे। रात को घर लौटते तो मैंने कभी कोई शिकायत नहीं की, न ही उन्हें रोका, क्योंकि मुझे दिल से इत्मिनान था कि इस कार्य की वजह से अल्लाह तआला ग़ैब से हमारे सारे काम सँभाल रहा है।"

उनके बच्चों में से एक बेटे मुनीब महमूद साहिब वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी और मौलवी सिलसिला हैं। वे पाकिस्तान में ही सेवा कर रहे हैं।

अल्लाह तआला मरहूम पर मग़फ़िरत और रहमत की बारिश करे, उनके दर्जात बुलंद करे, और उनकी औलाद को उनके नक़्श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। नमाज़ के बाद नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब अदा की जाएगी।

130 वां जलसा सालाना क़ादियान 26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad